राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

लक्ष्मीनारायण लाल

पता : द्वारा—राजपाल एण्ड सन्ज
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य : आठ रुपये (8.00)

प्रथम संस्करण 1977
SAGUN PANCHHI (Play), by Dr. Lakshmi Narain Lal

बेटी सरोजनी को

निवेदन

हमारे देश मे किसी समय गृहस्थाश्रम को जीवन धर्म साधन या साधना का मूल केन्द्र माना गया था। इसको ऊंचा सम्मान मिला था क्योंकि स्त्री, पुरुष दोनों के लिए यह मुक्ति-मार्ग था। यह विषयभोग के लिए था। इतना प्रगाढ सम्पूर्ण भोग कि मुक्ति मिल जाए। इसका एक महत्त्वपूर्ण मर्म था। उस घर-गृहस्थी का सम्बन्ध जितना ही अपने भीतर था, परस्पर था, उतना ही उसका सम्बन्ध बाहर से था। वहां संचय का एक भाग परायो के लिए भी होता था। फलतः वहां अपनों, आत्मीयो के प्रति स्वाभाविक स्नेह के अलावा मानव कल्याण की इच्छा की एक विशेष हृदय-वृत्ति पैदा होती थी। हमने तब यह कभी नहीं माना कि घर-गृहस्थी केवल अपने स्वार्थ का स्थान है। गृहस्थी अपने प्रभुत्व की किलेबंदी है।

पर जिस दिन यह जीवन-मूल्य-भूमि टूटी, घर-गृहस्थी अपने स्वार्थ और प्रभुत्व का दुर्ग बनी, उसी समय से स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो मे तनाव आया। दोनों एक-दूसरे के प्रतिपक्षी और विरोधी बने। और एक अजब तरह का नफरत-निन्दा-प्रतिस्पर्धा का भाव नगर-जीवन से लेकर लोक-जीवन तक फैला। लोक-चेतना ने इसी सच्चाई को तोता-मैना की कथा कहा है। जगल में आंधी, वर्षा और दुर्दिन की एक शाम है। मैना (स्त्री) आराम से अपने घोंसले मे बैठी है। तोता (पुरुष) आता है। मैना से कहता है—मैना ! आज की रात मुझे यहां बिता लेने दो। कल सुबह यहा से चला जाऊंगा। मैना दो टूक जवाब देती है कि मुझे पुरुष

जाति पर जरा भी विश्वास नही, मेहरबानी कर आप यहा से तशरीफ ले जाइए। तोता के पुरुष-अहंकार पर निश्चय ही चोट लगती है। वह प्रतिवाद करता है कि वाह ! स्त्री, जो स्वयं ऐसी विश्वासघातिनी है, निठुर और प्रपंची है, वह पुरुष के खिलाफ ऐसी बेबुनियाद बात कहे ! अपने-अपने पक्ष की वकालत मे दोनों की कथाएं शुरू होती हैं। मैंना की कथा यह साबित करती है कि पुरुष बुरा है। तोता की कथा यह दिखाती है कि स्त्री बुरी है। इस तरह वादी-प्रतिवादी कथाएं कहने-सुनने मे सारी रात बीत जाती है। कोई पक्ष हार नही मानता। इतना ही नही, परस्पर विश्वास भी नही करता। सुबह होती है। एक हंस आता है। बुजुर्ग पंच की हैसियत से दोनो की शादी करा देता है।

इस लोक-कथा के स्त्री-पुरुष शक्ति के दोनो प्रतीक पछी कथा के पात्र है। मैंने उन्नीस सौ साठ मे तोता-मैंना को नट और नटी के रूप मे प्रस्तुत कर 'नाटक तोता-मैंना' लिखा। उस नाटक मे स्वभावतः एक ही कथा चलती है, जिसका एक अंक मैंना का पक्ष है तो दूसरा अंक उसके विपरीत तोता के पक्ष का ज्वलन्त उदाहरण बनता है, और अंत शादी से होता है जिसे हंस कराता है। गान होता है :

तोता मैंना की हुई जैसे मुराद पूरी
ईश्वर आप सबकी करे वैसे मुराद पूरी
यहा न पुरुष बड़ा यहा न नारि बडी
दोनों एक रथ की धुरी..............

गान तो हुआ। उपदेश भी हुआ। लोक-कथा का सुखद अन्त भी हुआ। दर्शकों को आशीष और मंगल कामनाएं भी मिली, कि जैसे तोता-मैंना की मुराद पूरी हुई, ईश्वर आप सबकी मुराद पूरी करे। तो हमारी मुराद, इच्छा, लक्ष्य क्या है ? शादी हो जाना ? चलिए, शादी हो गई। बाराती विदा हुए। स्त्री-पुरुष पत्नी और पति के रूप मे गाठ जोड़े घर

के अन्दर आए। गृहस्थी जमने को हुई। दुल्हन देखती है कि पति घर मे ही नही रहता, पर घर का स्वामी वही है। पत्नी उससे कोई कैफियत मागे तो घर मे झगड़ा, कलह और तनाव। पत्नी अपने घर (बंगले) के पिछवाड़े बाग और फुलवारी के साथ अपने को जोड़कर स्वयं को और अपनी उस घर-गृहस्थी को सजीव रखना चाहती है। इस प्रयत्न मे वह स्वयं टूटने लगती है। यह नाट्य कथा है, 'नाटक तोता-मैना' के बाद 'रातरानी' की। रातरानी की कुन्तल, स्त्री, अपने उस घर मे अपने पति जयदेव में, पुरुष मे एक चीज ढूढकर पाती है, कि यदि अहकार की प्रतिष्ठा, व्यक्ति की स्वच्छन्दता, उसीकी सुख-सुविधा पर ही स्त्री-पुरुष का मिलन आधारित हो तो वह मिलन और टूटन बिलकुल ही व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करेगा। इसीकी परिणति यह होगी कि जिस घर मे, स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो के बीच व्यक्ति विशेष की सुख-स्वच्छन्दता का ही आधार होगा वहा पति-पत्नी की विषय सम्मति भी बिलकुल निजी होगी। सम्मति ही तब स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो का आधार होगी। इसमे आनन्द नही मिल सकता। इसमे उपजती है ईर्ष्या। पैदा होता है कलह। उसमें कुछ निर्मित नही होता। व्यर्थ ही मे सब टूटता है। पुरुष स्त्री पर सन्देह ही नही, अविश्वास करता है। वह कहता है—मैंने तुम जैसी बहुत औरतें देखी है। स्त्री जवाब देती है—यही तो मेरी करुणा है। तुमने बहुत औरतें देखी है, मैंने सिर्फ एक पुरुष देखा है। पुरुष और गहरी चोट करता है—सच ? आओ चलो, यह मेरे हाथ पर हाथ रखकर कहो ! पत्नी पूछती है—सप्तपदी के वक्त अग्नि के सामने तुम्हारे हाथ मे मेरा हाथ रखना क्या काफी नही था ? पति दो-टूक जवाब देता है—नही। स्त्री को, पुरुष के उस अविश्वास के पीछे जो मर्म है, उसका बोध पहले ही हो चुका है। वह अनुभव कर चुकी है—पुरुष की समस्या अधिकार की है। तभी वह सब कुछ बाटकर देखता है—स्त्री

को अपने पुरुष से बाटकर। पत्नी को नही, दहेज में मिली हुई महज एक औरत के रूप मे देखता है। वह समझती है—तुम मेरे पति हो, पर तुम अपने-आपको महज मेरा स्वामी समझते हो। पति को पूरा विश्वास है कि वह सब ठीक समझता है।

अब इस प्रश्न को पति-पत्नी सम्बन्धों से दूर शुद्ध प्रेम के धरातल पर देखें।

'सूर्यमुख' नाटक मे पौराणिक पृष्ठभूमि पर प्रद्युम्न और वेनुरती, इन दो प्रेमी-प्रेमिका का साक्षात्कार है। यहा स्त्री-पुरुष शुद्ध प्रेम-सम्बन्धो की भूमि पर खडे है। पर प्रम उन्हे जितना ही जोडता है, परस्पर के सन्देह, उन दोनो के बीच कृष्ण की छाया, उनके व्यक्तित्व की स्मृति उन्हें उतना ही तोड रही है। वहा न घर है, न कोई गृहस्थी है, पर उस मिलन मूल्य की तलाश है जहा उनका प्रेम उन्हे मुक्त कर दे। पर सवाल यह है कि यहा उनके सम्बन्धो के तनाव के भीतर ही डूबकर उन्हे एक दूसरे को पाना है। जितना बडा, गहरा प्रेम है दोनो स्त्री-पुरुष का, उतना ही गहरा और वडा दोनों मे सम्बन्ध-बोध का तनाव है। ऐसा लगता है, अगर उतना गहरा, बडा सन्देह न होता तो वह सूर्यमुख प्रेम भी न होता। अगर उतना तीव्र-तीखा तनाव न होता तो दोनो ने जिस चीज, जिस अनुभूति को प्राप्त किया, वह सम्भव न होता। उस सन्देह-भरी तनावपूर्ण स्थिति मे वेनुरती और प्रद्युम्न का जो प्रेम पला है उसने जैसे सारी प्रकृति को, प्रकृति के सारे तर्कों को ही बदल दिया है। द्वारिका से दूर, वेनुरती से अलग, प्रद्युम्न जिन सूनी पहाड़ियो में आत्म-निर्वासित है वहा विना बादल के हर क्षण बिजली चमकती है, बादल गरजते हैं, विना मेघ के वर्षा होती है और शत-शत द्वारिका वहा हर क्षण डूबती है।

प्रद्युम्न ने वेनुरती से प्रेम कर पूरी द्वारिका को अपने खिलाफ कर

लिया है। वह खुद मानो अपने विरोध में खड़ा है। वह वेनुरती के लिए अपने सम्बन्धों के पक्ष मे सबसे लड़ता है। अपने-आप से लड़ता है। हारता है। वेनुरती से लड़ता है, यहा और पराजय मिलती है। वह वेनुरती के चरित्र के खिलाफ विष उगलता है। वेनुरती उसके खिलाफ चलती है। दोनो में जैसे कोई साम्य नही। मिलन का कोई विन्दु नही। पर वही बिन्दु तो उनकी तलाश है और वही उनका प्रेम-सम्बन्ध है। उसीमे से उन्हें वह गहन अनुभूति मिलती है—'हम दोनों मे दोनो था। अब और प्रश्न मत करो मुझसे। अन्त.पुर में, उस पहले दिन जब तुम्हें देखा था, समर्पित हो गई थी, यद्यपि मैं लज्जित थी। जिस दिन तुम्हारे अंक में सोई थी, यद्यपि घृणा से भर गई थी, फिर भी तुम्हे प्यार किया था। उस दिन मैं क्रोध से पागल थी, जब तूने जरा के सामने मुझे अपमानित किया, पर आज मैं केवल पिया हू, लज्जित नही।' पर स्त्री-पुरुष के उस मिलन, उस प्राप्ति मे भी एक सनातन प्रश्न है। घायल वेनुरती, क्षतविक्षत प्रदुम्न दोनो ने एक मुख से वही प्रश्न किया था—हे घायल ईश्वर! हम तुझे समझना चाहते हैं, क्या थी तेरी इच्छा हमारे माध्यम से? क्यों था हमारा प्रेम इतना आश्चर्यजनक और कठोर? फिर भी इतना कोमल। और हमारी प्रतीति इस विनाश के साथ ही क्यो हुई? इतने गहरे जल मे हम प्यासे क्यों थे?

हिन्दू समाज एक स्थायी युद्ध की अवस्था मे रहा है। क्योंकि देश में यही एक समाज नही है। यह विभिन्न, विपरीत आचार-व्यवहारों वाले समाजों से घिरा हुआ है। उनके आक्रमणों से अपनी सत्ता की रक्षा करने के लिए इसे सतत सतर्क रहना पड़ा है। इसलिए इस समाज ने अपने चारों ओर एक मानसिक, नैतिक और धार्मिक दुर्ग बनाया और उसीमे निवास करने लगा। तभी अपने-पराये, स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, भेद और विरोध के बारे में यह इतना सचेत रहा है। इसीलिए व्यक्तिगत स्वा-

धीनता का दमन जितना अधिक यहां हुआ है, उतना शायद और कही नही। मैं उन समाजो की बात नही कर रहा जहा कभी कोई स्वतन्त्रता थी ही नही। इसका नतीजा सबसे ज़्यादा स्त्री-पुरुष सम्बन्ध-बोध पर पड़ा। बिना किसी रिश्ते में बाधे स्वतन्त्र रूप से स्त्री-पुरुष को देखा ही नही गया। स्त्री स्त्री नही है, वह खुद अपने-आप मे, अपने लिए कुछ नही है। वह किसी और की मां है, बहन है, बुआ है, मौसी है। यही स्थिति पुरुष की है। और रिश्तो-सम्बन्धों की हालत यह है कि जैसे कही 'करफ्यू' लगा दिया गया हो या लग गया हो।

स्त्री-पुरुष सम्बन्धो का यही 'करफ्यू' नाटक है। शहर मे उत्पात और उपद्रव हो गया है और अचानक 'करफ्यू' लग गया है। यह उत्पात और उपद्रव और फलस्वरूप करफ्यू एक तरह से हमारे जीवन के भीतर का उपद्रव और उसके दमन का, करफ्यू का, प्रतिफलन है। उसीकी अभिव्यक्ति है। चूकि हमारा आपसी जीवन, चाहे वह प्रेम हो या विवाह हो या कोई कर्म हो, सम्बन्धो के उसी करफ्यू के भीतर रुंधा, बंधा और यहां तक कि उसीमें कैद है। हम यों भी कह सकते है कि चूंकि हमारा व्यक्तिगत जीवन, बौद्धिक, शारीरिक और मानसिक करफ्यू मे, हदबन्दी मे, पाबन्दी मे, वर्जनाओं मे घिरकर जिया जाता है, उसी नाते हम अपनी जीवनी शक्ति को अभिव्यक्त करने के लिए समाज मे, घर मे, पास-पडोस मे अपराध कर बैठते है। उपद्रव और उत्पात करते है और इस तरह से अपने सम्बन्धो के भीतर लगे 'करफ्यू' को तोडना चाहते हैं। इस तरह हम अमानवीय, अस्वाभाविक होकर ही अपने सहज मानव को, मानवीय सम्बन्धो को प्रकट करने के लिए मजबूर होते है। कविता नामक पत्नी पर-पुरुष सजय से कहती है कि क्या सयोग है, इस करफ्यू के कारण आपसे भेंट हो गई। चाहा कितनी बार था कि आपसे मिलू, आपकी प्रशंसा करूं लेकिन आज हो पाया है और वह भी अकस्मात्!

मनीषा एक स्वतन्त्र युवती एक पुरुष गौतम से यह जानना चाहती है कि आपने मुझे जब पहली बार देखा तो मेरे बारे में क्या सोचा। पुरुष बताता है कि यह उसकी आदत है, प्रकृति है, कि देखते ही वह एक 'आइडिया' बना लेता है और उसे बदलता नही। जरूरत नही महसूस होती।

और सम्बन्धों का यह 'करफ्यू' जब टूटता है तब पुरुष महसूस करता है कि हम सब अपने-अपने सत्य के छोटे-छोटे घरौंदे बनाकर उसीमें रहने के इस हद तक आदी हो चुके है कि दूसरे का सत्य हमारी पकड से बाहर हो जाता है। हम समझ नही पाते और समझना हम चाहते नही। लेकिन खासकर स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध-जगत मे एक क्षण ऐसा आता है जब तेज आंधी मे रेत का घरौदा बालू बनकर बिखर जाता है। मन में तब शंका पैदा होती है कि कही दूसरे का सत्य ही तो वास्तविक नही? फिर भी, आधुनिक पुरुष या स्त्री को आदतन एकदम विश्वास नही हो पाता और वह 'शायद' कहकर टालना चाहता है। पर सम्बन्धों का करफ्यू टूटने के बाद मनीषा स्त्री प्रश्न करती है कि क्या छोटे-छोटे व्यक्तिगत सत्यों से ऊपर एक बडा सामाजिक सत्य नही होता? उसे न मानना या अस्वीकार करना जीवन को नकारना नहीं?

पहले समय-समय पर, किसी न किसी उपलक्ष्य से हमारे घरो मे स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध-बोध में दूसरों के अधिकार स्वीकार किए गए है, चाहे इससे समय, सम्मान, आत्म-सुविधा या धन की क्षति भी क्यों न हुई हो। कल्याण को ध्यान मे रखा गया, केवल स्वार्थ को नही। स्वार्थ व्यक्तिगत है या नही? स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी के बीच आज क्या कुछ व्यक्तिगत है? यही कथा प्रश्न है 'व्यक्तिगत' नाटक का। जो मनुष्य घर बसाकर अपनी इच्छानुसार रहता है उसको हमारे यहा गृहस्थ नही माना गया। यहा कर्म का मतलब स्वार्थ साधन नही, बल्कि समाज के प्रति

कर्तव्य-पालन है। गृह-धर्म-पालन हो या स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध हो, इसे तपस्या माना गया है। पर उसकी जगह जब से भोग, स्वार्थ आया, हमारे घरों मे, प्रेम या स्त्री-पुरुष-सम्बन्धों में तब से 'वह' अनुभव करने लगी—'मैं देख रही हू एक सम्पूर्ण आइना था, जो टूटकर असंख्य टुकड़ों मे बिखर गया। अब उसके हर टुकडे में वही 'मैं' दिखता है और अपने-आपको सम्पूर्ण कहता है। पर दूसरे को, मुझको, टुकड़ों मे बांटकर देखता है। मैं धर्मपत्नी, प्रेमिका, पार्टनर, नौकर, मां, 'इंटेलेक्चुअल' खिलौना, 'वाइफ आफ पोलीगेमस'···एक पूरा दर्पण था, जो टूटकर अनगिनत तरह-तरह के टुकडों मे बिखर गया।' स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों मे आज गुण क्या है ? यह खेल है ? इस खेल में कोई गुण नही ? नहीं ? तो गुण क्या होता है ? कहा से आता है ? अपने सहचरों के साथ जिस बन्धन मे बंधना होता है, उसीमे फिर मधुरतम मानवीय गुणों का विकास होता है ? और यही है व्यक्तिगत स्त्री-पुरुष के बीच, जहा वे दोनो एक होते हैं।

सारे संकटों और तनावों के बावजूद स्त्री-पुरुष को एक होना पड़ता है। तभी कोई काम होता है। पर यह तनाव, संकट, विरोध सनातन है क्या ?

प्रकृति और पुरुष तो सनातन हैं। ये दो शक्तियां है। एक जल है तो दूसरा ताप है। एक धरती है तो दूसरा सूरज है। बिना एक के दूसरे का अस्तित्व नहीं। पर दोनों सर्वथा दो हैं। दोनों का दो बने रहना ही उनकी अपनी अस्मिता है। तभी इन दोनों के योग से तीसरे का सृजन और विकास होगा। उदाहरण के लिए, एक पौधा है। उसे जितनी आवश्यकता माटी की है, जल की है, उतनी ही जरूरत है उसे सूरज के ताप की। धूप की। दोनो मे तनाव चिरन्तन नही है। तनाव तो देन है उन दोनों के सहज-धर्मा न होने की।

तोता-मैना में इतना विरोध है; तनाव है, पर लोक-मानस या उसकी सहज चेतना फिर भी उन दोनों की शादी कराके यह दिखाती है कि कुछ भी हो, दोनों को कहीं मिलना ही है। जिन्दगी सारे मतभेदों, विरोधों के बावजूद चलेगी। प्रकृति और पुरुष अलग-अलग शक्तियां हैं पर जहां वे मिल रही हैं, वही सृजन है और यही है सगुन। यही है 'सगुन पंछी', तोता-मैना से आगे चलकर, बल्कि स्त्री पुरुष सम्बन्धों, चरित्रों के सागर तट पर पहुंचकर दोनो सगुन पंछी दिखे। इन्होंने अपना ही नाट्य रूप और रंगमंच-प्रकार सृजन कर डाला। वास्तव में ये सगुन हैं।

लोक-जीवन मे सगुन का भाव है शुभ। निर्गुण वाला सगुण नहीं। पर नहीं, भूल हो रही है। जो सगुण है वही तो सगुन है।

—लक्ष्मीनारायण लाल

निर्देशक की ओर से

एक दिन 'धर्मयुग' में लक्ष्मीनारायण लाल जी का एक लेख पढ़ने को मिला। तोता-मैना की पारंपरिक लोक कथा को लेकर कभी इन्होंने एक नाटक लिखा था, जिसका नाम था 'नाटक तोता-मैना'। वह नाटक तब सत्यदेव दुबे ने बम्बई मे 'थियेटर यूनिट' से प्रस्तुत किया था। उसके बाद, उस नाटक का कोई अता-पता नही था। बाद में पता चला, लाल ने खुद उस नाटक को कही छिपा दिया। 'धर्मयुग' के उस लेख मे पढ़ने को मिला कि तोता-मैना का अन्त मे विवाह हो गया। पर विवाह के बाद क्या हुआ, असली नाटक तो वही है। उसी बात को लेख में एक नये सिरे से उठाते हुए लाल ने लिखा था कि स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों मे जो संघर्ष है, जो लडाई-झगडे, मन-मुटाव के तत्त्व है, वही तो इस बात के साक्षी हैं कि दोनों दो जीवित शक्तियां हैं। शक्ति का काम ही है लड़ना, क्योंकि स्त्री-पुरुष के सन्दर्भ में दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। जब पूरक तत्त्व मे गडबडी आती है तब संघर्षों के अलावा और कोई चारा नही। पर लाल ने जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, आकर्षक, मौलिक बात कही, वह यह कि यही संघर्ष ही तो 'सगुन' है। संघर्ष सगुन है और इसी विश्वास मे उन्होंने 'नाटक तोता-मैना' को नये सिरे से दुबारा, नया लिखा और 'सगुन पछी' नाम दिया, इस बात मे मैं बहुत ही आकृष्ट हुआ।

उन दिनो मैं लखनऊ, कानपुर क्षेत्र मे रंगमंच-प्रदर्शन कार्य कर रहा था। कानपुर मे ही डा० लाल से 'सगुन पंछी' की पाण्डुलिपि मंगाकर मुझे इसे पढ़ने का सौभाग्य मिला।

'सगुन पंछी' को पढकर मुझे जितना ही महत्त्वपूर्ण इसका कथ्य लगा, उतना ही आकर्षक मुझे इसका 'फार्म' लगा। अब तक मुझे इस बात का पता न था कि लाल की इतनी पहुच संगीत मे भी है। और वह स्वयं संगीत का इतना कलात्मक प्रयोग और व्यवहार अपनी रचना मे इतनी सहजता से कर सकते हैं।

'फार्म' मेरे लिए एक चुनौती थी। खासकर उसे प्रदर्शन के धरातल पर सजीव प्रस्तुत करना। मैं जन्म से कश्मीरी, नाट्य शिक्षा संस्कार मे दिल्ली के नेशनल स्कूल आफ ड्रामा का—और अपनी रंग प्रकृति मे 'सगुन पंछी' शुद्ध अवध का—ठेठ पूरब के लोक रंगमंच के तत्त्वों को अपने में समाहित किए हुए।

इसे बार-बार पढने से इसका 'फार्म' सामने पूर्णत· प्रकट नही हो पा रहा था। इसका नाटक समझ मे आता था, पर रहस्यत्व-बोध नही हो पा रहा था। फिर मैने उसका गायन शुरू किया। ज्यो-ज्यो उसका संगीत फैला, त्यो-त्यों उसका फार्म मेरे सामने सजीव होने लगा। तब एक महत्त्वपूर्ण बात मेरे हाथ लगी। लाल ने 'सगुन पंछी' के रूप मे कोई पारम्परिक ज्यो का त्यो लोक नाटक नही लिखा, वरन् उन्होने अपने लोक नाटक, लोक रंगमच के किन्ही जीवन्त नाट्य व्यवहारों, तत्त्वों, परम्पराओं और रूढियों का इस्तेमाल कर एक नया नाटक निर्मित किया है। एक रचना की है अपनी लोक परम्पराओं के तत्त्वो के कलात्मक योग मे। और यह रचना, कथा, अभिनय, संगीत, घटना-क्रम, व्यवहार और संवाद, इन सभी स्तरों, आयामों से है। इसमे नाटककार जितना आत्मपरक है, उतना ही वस्तुपरक। लोक रंग-तत्त्वो के प्रति वह जितना भावुक है, शायद उससे कही ज्यादा वह उनमे तटस्थ और निस्संग है। वह दूर से नजदीक है। और नजदीक मे वस्तुपरक है, तभी इतना कलात्मक इस्तेमाल यहा इस रचना मे सम्भव है। बल्कि मैंने यहा तक

अनुभव किया कि यह रचना तभी हुई है जब इसके रचनाकार ने अपने लोक-तत्त्व को अपने समय, काल और सन्दर्भों मे देखा है—और देखकर पाया है 'सगुन पंछी'।

अब तक मैं अन्य नाटको के निर्देशन, प्रस्तुतीकरण कर प्रायः उन्हें मच पर 'इंटरप्रेत' करता था। उसमे मैं अपना योग देता था—अपनी मंच-सज्जा, प्रकाश-योजना, अभिनय-तत्त्वों मे—पर पहली बार मैंने इस नाटक को प्रस्तुत कर इससे कुछ पाया है। इसने उलटकर मुझे दिया है—जब कि अब तक मै यह सोचता आ रहा था कि निर्देशक नाटक को देता है। देना ही पाना है—यही है मेरे निर्देशक का सगुन।

स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो का यह धरातल, यह प्रसंग, यह दर्शन मेरे लिए बिलकुल नया था। इस नये को मंच पर प्रस्तुत करना, प्रकट करना, दर्शको तक पहुचाना ही मेरा वह कार्य था, जिसका आनन्द मैं कभी नही भूल पाऊंगा।

अपने इस कार्य मे मैंने आधुनिक रंग-तत्त्वों से भी सहायता ली। और मैं इस प्रक्रिया मे इस नतीजे पर आया कि यदि नाटक अपनी मिट्टी का है, सच्ची कृति है, तो उसके प्रस्तुतीकरण मे आधुनिक-प्राचीन, लोक और शास्त्रीय का अन्तर कही सहज ही मिट जाता है।

तभी मैं यह कहना चाहूंगा कि 'सगुन पंछी' मे मेरा अपना फार्म क्या था, उसे मै अपनी तरफ से कोई नाम नही देना चाहता। यह आपका काम है।

काश! लाल जैसा कोई एक और नाटककार हिन्दी को मिल जाता… !

२ जुलाई, १९७६ **—बंशी कौल**

'सगुन पंछी' का प्रथम प्रदर्शन ११ फरवरी, १९७६ को मर्चेण्ट्स चेम्बर हाल, कानपुर में, 'अभिनव' द्वारा हुआ।

भूमिका में

राजा	राकेश तनेजा
रानी	अंजली मित्तर
गंगा एवं मैना	श्यामली मित्तर
पंचम एवं तोता	हेमेन्द्र भाटिया
मन्त्री	दीप सक्सेना
मसखरा	अखिल मिश्रा
पंछी एवं मुसाफिर	तरुन
पंछी एवं प्रेत	कपूर सोनकर
पंछी एवं सहेली	विनीता कैंपिहन
नीलकंठ एवं वृद्ध	प्रबोध भींगन

श्रेय

संगीत	गुलाम दस्तगीर
नृत्य	श्रीमती रोहिणी भाटे
मुखौटे	श्यामली मित्तर एवं हेमेन्द्र भाटिया
गायक	गुलाम दस्तगीर, श्रीमती दीपश्री मोहन एवं सम्पूर्ण पात्रगण
वादक	अशोक, रघुवीर, मुन्ने खां
निर्माण एवं निर्देशन	बंशी कौल

दिल्ली में सगुन पंछी का पहला प्रदर्शन 'लिटिल थियेटर ग्रुप' द्वारा फाइन आर्ट्स थियेटर में, सुब्बाराव के निर्देशन में २७ सितम्बर, १९७६ को हुआ।

भूमिका में

नीलकंठ	ज्ञानेश मिश्रा
मसखरा	सत्यप्रकाश
तोता—पंचम	राजीव गोयल
मैना—गंगा	गीता शर्मा
राजा	दर्शन सहेल
रानी	नीरू भार्गव
मन्त्री	मोहम्मद अयूब
वृद्ध	जैमिनी कुमार
प्रेत	रमेश कपूर
पहली स्त्री	नीरू भार्गव
दूसरी स्त्री	ममता
पंछी (कोरस)	सुरेश भारद्वाज, अखिलेश खन्ना, मुश्ताक, विजय मन्ना, प्रेमचंद, नीरू भार्गव, ममता, फरहत
संगीत और नृत्य रचना	पंडित शिवप्रसाद
संगीतकार	तारा और साथी
मंच-विधान	सुब्बाराव
सह-निर्देशन	जैमिनी कुमार

पात्र :

जंगल के पंछी
नीलकंठ
तोता
मैना
मसखरा

चरित्र :

राजा
रानी
पंचम
गंगा
वृद्ध
प्रेत
मन्त्री
दो औरतें, आदि

पूर्व रंग

(नाटक के पात्र विविध पंछियों के रूप में गाते हैं।)

सगुन दे चिरई चुनगुन कुआं पनिहारी हो
सगुन दे माता सुहागिन जेहि के सगुन सुभ हो।

नीलकंठ : नारि सुहागिन जल घट लावै।
पुरुष अंधेरे दीप जलावै।।
सनमुख धेनु पियावै बाछा।
मंगल करन सगुन है आछा।।

सब : सगुन दे चिरई चुनगुन कुआं पनिहारी हो।
सगुन दे माई सुहागिन जेहि के सगुन सुभ हो।।

नीलकंठ : इक पैठी जल भीतर रटत पियास पियास
एक बैठा जल ऊपर नैनन पियत हुलास।।

सब : सगुन दे चिरई—सबके सगुन सुभ हो

(मसखरा आता है जिसकी बहुत लम्बी दाढ़ी है। हाथ में टेढ़ा-मेढ़ा डंडा लिए है।)

दया भई भगवान की जो मरा हमारा बाप
भाई लोग मृदंग बजा मैं दू तबले पर थाप।
ता ता धिन ताता
ता ता धिन ताता
मेरे बाप का क्या जाता
ता ता धिन ताता

मेरे बाप से मेरा क्या नाता
ता ता धिन ताता
ता ता धिन ताता
सबको अलग-अलग कर दू
औरत को मरद कर दू
नही-नही, औरत-मर्द को अलग कर दू
बोलो भाई, इसमे मेरा क्या जाता
ता ता धिन ताता
ता ता धिन ताता
हा मेरा है क्या जाता
ता ता धिन ताता...।

(इस बोल पर सारे नाचते रहते हैं।)

मसखरा : सुनो मेरे प्यारो
सुनो मेरे प्यारो
किस्सा तोता मैना
दिल मे विचारो।

सब : सबका अशीस है
सबको सलाम है
खेल अब शुरू है सबको प्रणाम है

मसखरा : कथा है पुरानी
नया है जमाना
जो गई नानी
मर गया नाना
खेल बेहतरी है
जरा आजमाना।

सब : (नाचते हुए) यह फिल्म नही थेटर
यह फिल्म नही थेटर
यह फिल्म नही थेटर
यह थेटर है सबका

(सब एक बिन्दु पर रुक जाते है ।)

मैंना : मैं मैंना मैंना मैंना ।

तोता : मैं तोता तोता तोता ।

(कई बार नृत्यवत गतियों से आ-आकर कहते हैं ।)

मसखरा : हैअ हैअ हैअ
पुरु पुरु पुरु
झगड़ा इनका शुरू शुरू शुरू ।

मैंना : मैं मैंना मैंना मैंना ।

तोता : मैं तोता तोता तोता ।

मैंना : तो क्या ?

तोता : तो क्या ?

मैंना : मै हूं मैंना अपने घर की रानी हूं मैं ।

तोता : मै हूं तोता अपने घर का राजा हूं मैं ।

मैंना : मैं हू मैंना अपने घर की रानी हू मैं ।

तोता : मैं हूं तोता अपने मन का राजा हू मैं ।

मैंना : तो ?

तोता : जंगल में आयी आधी
टूटा मकान मेरा
तूफान ले गया सब
सारा जहान मेरा ।

मैंना : तो क्या करूं मैं ?

तोता : मैं अतिथि तुम्हारा कैसे क्या बताऊं
इस जंगल मे यही आज मैं रात बिताऊ ।

मैना : तू पुरुष जाति मैं नारि
नही तुम पर मेरा विश्वास
चल उड़ जा यहा से
छोड दे यहा रहने की आस ।

तोता · भला नारी बोले ऐसी बात
करेजा मोरे खून बहे
(सब गाते हैं ।)

तोता : जो खुद है निर्दयी विश्वासघाती
एक को छोड़ दूसरे संग चली जाती

मैना : भला पुरुप बोले ऐसी बात
करेजा मोरे खून बहे ।
(सब गाते हैं ।)

मसखरा : मामला गरम है
अब खेल शुरू कर दू मुझे क्या शरम है ।
देख री मैना
यह चरित्र-कथा है नारि जाति की ।

मैना : यह चरित्र-कथा है
पुरुष जाति की ।

मसखरा : कंचनपुर के एक नगर मे
अंगध्वज राजा रहता था ।

नीलकंठ : कंचनपुर के उसी राज मे
पचमबीर किसान रहता था ।

मसखरा : उसकी रानी चंद्रमुखी थी ।

नीलकंठ : किसान की औरत बड़ी नेक थी
बड़ी सुन्दरी
जैसा किसान वैसी ही उसकी पत्नी ।

मसखरा : राजा-रानी में बड़ा प्रेम था ।

नीलकंठ : किसान-किसानी में बड़ा विश्वास था ।

मसखरा : ऐ चिड़ी का गुलाम
मत बोल बीच में ।

नीलकंठ : अच्छा बिना सींग-पूछ के...।

मसखरा : क्या कहा बिना सींग-पूछ के ? वह होगा तेरा दादा ।
लकड़दादा । नादा । सादा । खादा ।
आकर सम्हालो मेरी दाढी । मैं देखता हू इसकी नाडी ।
चलाऊं इसकी गाड़ी । मारूं वह लात कि जाय गिरे बंगाल की खाडी ।

(दो लोग उसकी लम्बी दाढ़ी को अपने हाथों पर रखकर चलते हैं । शेष लोग गाते है ।)

हजारा मोरे कान का मोती
मोती मेरा कीच पडा है
ले जमुना जल धोती
अगले पहर मैने मोती गंवाया
पिछले पहर खड़ी रोती
मोती के बदले मोती मंगा दो
मोती बिना नही सोती
मोती मेरा जो कोई ला दे
लाख रुपया देती
हजारा मोरे कान का मोती ।

पहला अंक

पहला दृश्य

(संगीत समाप्त होते-होते दायीं ओर तोता जो अब किसान बन गया है और मैना गंगा, दोनों दिखते हैं। किसान पंचमबीर अपने सिर पर पगड़ी बांध रहा है जिसका दूसरा सिरा युवती गंगा थामे हुए है। वह गा रही है—)

एक साथ मन उपजी जो विधि पुरवई
ए हो राजानगर तक जइहो पियरी ले आवो।

(किसान गाता है—)

ए हो राजानगर बसै दूर कोसवन को चले
घर ही मे पियरी रंगइबो पियरी रंग पहिरो।

(दोनों गाते हैं। इधर बायीं ओर राजा खड़ा है। रानी कोप किए बैठी है। पीछे दृश्य बने पंछी लोग खड़े हैं।)

रानी : हजारा मोरे कान का मोती।

(पंछी गाकर दुहराते हैं।)

पंछी : हजारा मोरे कान का मोती।

रानी : मैं तब तक अन्न-पानी छुऊंगी नही, जब तक मेरे कान का वह हजारा मोती नही मिलेगा।

राजा : मैं दूसरा बनवा दूगा।

रानी : मैं नही लूगी ।

राजा : रानी जिद न करो ।

(समानान्तर दूसरी ओर)

गंगा . तुम हो तो सब कुछ है ।

पंचम : तुम मेरे साफे की कलंगी हो ।

गंगा : मैं नदी तुम गंगा ।

पंचम : तू दीया मैं पतंगा ।

गंगा : मन चंगा तो कठौती में गंगा ।

(दूसरी ओर)

राजा : रानी, तुम्हारा मन कैसा है ?

रानी : उस हजारा मोती बिन जिऊंगी नही ।

राजा : पूरे राज-भर में ढूंढा गया । राज्य के सारे गुप्तचरों को हजारा मोती के इस तरह गायब होने के रहस्य का पता नही चला ।

रानी : उस रहस्य का पता तुम्हें लगाना होगा ।

राजा : मुझे ? राज-काज में क्या इसके लिए इतना समय मेरे पास है ?

रानी : तो मेरी इच्छा की कोई कीमत नही ?

राजा : तुम्हें अपने राजा की कोई इज्जत नही ?

(उधर पंचम अपनी पगड़ी बांध चुकता है । गंगा गाती है—)

अचरन सुरुज मनैइवैं
तवैं अपने राजा के पइवैं

(दोनों गाते हैं—)

मोरे महराजा के बड़ी-बड़ी अंखिया

वृद्ध : धीरज क्या होता है ?

मसखरा : धीरज क्या होता है ? अरे धीरज माने धीरज है। अरे रो नहीं, शान्त हो जा भाई !

वृद्ध : हमेशा शान्त ही तो रहा हूं मै। कौन हो तुम ?

राजा : तुम्हारी ही तरह प्रजा हूं। इस कंचनपुर राज्य का।

वृद्ध : जिसका राजा बुद्धि से अन्धा ग्रंगध्वज है ?

राजा : (अलग) यह कहना क्या चाहता है ? यह मुझे पहचान तो नही लेगा ? यह दुखी है, अशान्त है। क्या मैं भी स्वीकार कर लू कि मैं भी दुखी और अशान्त हू ? वह भी अपनी रानी के कारण। (रुककर) अपने को स्वीकार कर लू ? नही, स्वीकृति मे ही सारा उपद्रव है।

मसखरा : ओह, तभी हममे से कोई भी अपने को स्वीकार नही करता। यह बात है ! स्वीकार कर यह राजा कैसे रह सकता है ?

राजा : कल्पना करो, राजा तुम्हारे सामने खडा है।

वृद्ध : मेरे राजा का अपमान मत करो। मेरा राजा महाविलासी है। वह अपने रंगभवन में सारी रात रंगरेलिया करता है। दिन-भर सोता है।

राजा . फिर भी तुम राजा के पास जाना चाहते हो ?

वृद्ध : कुछ कहना है अभी। इसी वक्त।

राजा : विश्वास करो, मेरी भुजाओ मे इतना बल है कि मैं तुम्हारी कोई भी सहायता कर सकता हूं।

वृद्ध : क्या ?

राजा : हा।

वृद्ध : केवल शरीर-बल से वह सहायता नही हो सकती। उसके लिए आत्म-बल चाहिए।

राजा . राजा के पास आत्म-बल नही है ?

वृद्ध : आत्म-बल खोकर ही कोई राजा बनता है, तभी तो यह सबसे डरता है। (रुककर) बता दू ? धोखा तो नही दोगे ?

राजा नही।

वृद्ध प्रतिज्ञा करो, जो कुछ मै तुमसे बता रहा हू, कभी किसी से नही कहोगे। वचन दो।

राजा वचन देता हू—तुम्हारी बताई हुई बात किसी से नहीं कहूगा।

वृद्ध : यदि किसी से भी कहोगे तो उसी क्षण पत्थर हो जाओगे।

राजा : नही, ऐसा कभी नही होगा।

वृद्ध : तो सुनो, अभी कुछ ही देर बाद, रात का तीसरा पहर लगते ही राजा अ्रगध्वज को एक प्रेत आकर मार डालेगा।

राजा : राजा अ्रंगध्वज की मृत्यु प्रेतात्मा से होगी, ऐसा क्यो ? राजा ने क्या किया उस प्रेतात्मा का ?

वृद्ध : वह सामने देखो, पर्वत की उस चोटी पर, जहा से अभी वह तारा टूटा है, वही से वह प्रेतात्मा नीचे उतरकर इस महल मे सोते हुए राजा को दबोच लेगा और एक ही घूट मे उसके शरीर का सारा रक्त पी जाएगा। फिर उसके अस्थिपंजर को घसीटता हुआ उसी चोटी पर ले जाएगा।

राजा . क्यों ? ऐसा क्यों ?

वृद्ध : यह अ्रंगध्वज राजा अपने पिछले जन्म में साहूकार था। इसका नाम था—मणिसेन। उसकी स्त्री का नाम था—केसर। जो बडी सुन्दरी थी। मणिसेन अपनी सौदागरी मे कही दूर देश को गया था और उसकी स्त्री केसर घर मे अकेली

थी। घर का एक सेवक था, अठारह साल का एक ब्राह्मण बालक। रतनजोति नाम था। केसर उस रतनजोति को अपनी पाप-वासना का साधन बनाना चाहती थी। रतन-जोति ने इसका विरोध किया। और इसकी भयानक प्रति-क्रिया में केसर ने पति द्वारा उस अबोध सच्चरित्र बालक से जो बदला लिया, वह बेहद निर्मम था। रात के तीसरे पहर केसर ने अपने पति मणिसेन के हाथों जीवित रतन-जोति को आंगन में गड़वा दिया। वही रतनजोति अब प्रेत हुआ है। और आज रात राजा से अपनी मौत का बदला लेगा। नासमझी से दूसरों के कहने में जो आ जाता है, वह बुरा फल भोगता है।

मसखरा : (दुहराता है) नासमझी से दूसरों के कहने में जो आ जाता है वह उसका बुरा फल भोगता है।

(वृद्ध जाता है। पंछीगण गाते हैं।)

बुरा फल भोगता है
नासमझी से दूसरों के कहने में जो आता है
बुरा फल भोगता है।
खुद में जहर घोलता है
नासमझी से दूसरों के कहने में जो आता है।
बुरा फल भोगता है।

नीलकंठ : रोशनी पंछी है
जल पर बहती है
तुम्हारी पलकों के तले धूप छाव बुनती है

सब : अपनी रोशनी बुझाता है
नासमझी से दूसरों के कहने में जो आता है।

बुरा फल भोगता है।

नीलकंठ : भई रात
आंखें पलको मे सो जाती है
और इतजार करती है सुबह का

सब जो यह नही जानता
बुरा फल भोगता है
नासमझी से दूसरो के कहने में जो आता है।
बुरा फल भोगता है।

(गाते हुए सब राजा के आसपास दृश्यवत् खड़े हो जाते हैं।)

राजा क्या मैं दूसरों के कहने का विश्वास करूं ? क्यो नही, मैंने विश्वास किया अपनी रानी का। उसके कहने से उसका हजारा मोती ढूढने निकला। भेष बदलकर मैं पता लगाने चला।

मसखरा : देखो राजा की लीला, प्रजा का दुख-दर्द जानने के लिए यह कभी राजमहल से बाहर नही निकला। निकला कब जब अपने ऊपर विपत्ति आई—वो भी अपनी रानी के हजारा मोती के लिए। लेकिन बाहर आकर इसे मालूम हुआ कि इसकी प्रजा भी दुखी है, बस यह घबरा गया सच्चाई को देखकर। और फिर जब इसकी जान पर बन आयी तो देखो कैसा दुम दबा के भागा वापस राजमहल में। हजारा मोती की खोज धरी की धरी रह गई।

(गा पड़ता है।)

ऐसा होता है ऐसा होता है
राजा कै राज रोज रे लोगो परिजा कै नहि आस

राजा सोवै राजमहल मां परजा देखे उदास
ऐसा होता है ऐसा होता है ।

राजा . (पुकारता है) द्वारपाल । नगरपाल !

(सब पंछी तुरन्त राजा के वहीं अधिकारी के रूप में सावधान हो तैनात हो जाते हैं ।)

राजा : सावधान ! कोई राजमहल के भीतर पांव नही रखे ।

एक पंछी : जो आज्ञा महाराज ।

राजा · भीतर से चारों ओर बन्द कर लो ।

नीलकंठ : अब किसी की हिम्मत नही जो अन्दर आये ।

(चारों ओर से बन्द करने का अभिनय)

राजा : कोई आता दिखे तो बन्दूक से दाग दो ।
कोई कदम बढाये तो तलवार से काट दो ।

(राजा जाता है । पंछी कवायद करते हुए पहरा देने लगते हैं ।)

तेज चलो सावधान
राजा राजा परेशान
बिल्ली बोले म्याऊं म्याऊं
चूहा कहता खाऊं खाऊं
किसको किसकी है पहचान
तेज चलो सावधान···।

(राजा आता है । पंछी बन्दूक से दागने लगते हैं । राजा कहता है, 'यह क्या करते हो ?')

नीलकंठ : यही आपकी आज्ञा थी ।

राजा : बुद्धि और समझ भी कोई चीज होती है ।

नीलकंठ : हा भाई, कोई चीज होती है ।

मसखरा अपने ही बिछाए जाल में जब फंसते हैं तब पता चलता है। अभी खुद ही आज्ञा दी कि कोई आता दिखे तो बन्दूक से दाग दो। भाई! कोई में आखिर राजा भी तो शामिल रहता है।

(पंछी आपस में सलाह करने लगते हैं और राजा के सामने क्षमा-प्रार्थी होते हैं। राजा परेशान और चिन्तित चला जाता है।)

मसखरा बेचारे सिपाही! सब परेशान हैं कि अब राजा उनको नौकरी से निकाल देगा। सलाह कर रहे हैं आपस में, अब क्या किया जाए? राजा से सब माफी माग रहे हैं। जैसे किस्सा हो उस दुमकटे लंगूर का जिसे न दीखे पास का और ना अतिदूर का।

(उसी तरह पंछी फिर पहरा देने लगते हैं। रानी आती दिखती है, पंछी तलवार चलाने लगते हैं। राजा दौड़ा आता है। रानी को बचाकर ले जाता है।)

नीलकंठ : आखिर बुद्धि और समझ भी कोई चीज होती है।

सब पंछी : हा भाई, कोई चीज होती है।

(नीलकंठ के सामने सब हाथ जोड़कर खड़े होते हैं।)

नीलकंठ जीवन बुद्धि से बडा है। जीवन बुद्धि के पार है। क्षुद्र से जब भी हम विराट को समझने चलेंगे तो क्षुद्र अपनी सीमाएं उसपर थोप देगा। जीवन को जीकर जाना जा सकता है, सोचकर नही। बुद्धि कहती है दो और दो मिलकर चार होने ही चाहिए। जिन्दगी में दो और दो कभी चार नही होते। मुर्दा चीजों को जोड़ो तो दो और दो चार होते हैं। पर दो प्रेमियो को गिनो, नापो, वे बढ़कर

हजार गुना हो जाते है। कैसा हिसाब है!

मसखरा : हा भाई, कैसा हिसाब है! बडी ऊची-ऊंची बातें मत करो। नीचे आओ। कुछ गाओ। मेरी दाढी उठाओ।

(नीलकंठ हंस पड़ता है। सब हंसने लगते हैं। भय-भीत राजा दिखाई पड़ता है। सब चुप हो जाते हैं।)

राजा : वह आ रहा है।

नीलकंठ : कौन?

राजा : वह आ रहा है।

(सारे पंछी आंख फाड़-फाड़कर देखते हैं, कहीं कुछ भी उन्हें नहीं दिखाई पड़ता।)

राजा : रोको उसे। बन्दूक चलाओ। बन्दूक। गोली। तलवार चलाओ।

(पंछीगण शून्य में बन्दूक और तलवार चलाने का अभिनय करते हैं। प्रेत केवल राजा को दिखता है। राजा मूर्तिवत् खड़ा रह गया है।)

प्रेत : ओह! तुम मुझे पहचानते हो? अपने-आपको भी पहचानते हो? क्या करते हो? क्यो करते हो? क्या खाते हो? क्या पहनते हो? क्या चाहते हो? देखते क्या हो? कभी देखा भी है?

राजा : हा, देख रहा हू।

प्रेत : तुम्हारे और देखने के बीच एक काला ऊंचा पहाड़ है जिसकी चोटियों पर गिद्ध बैठे हैं। अंधेरी घाटियों मे विषधर जीव-जन्तु, जीवभक्षी पशु घूमते हैं। तुम नही देखते। सिर्फ तुम्हारी आंखें देखती हैं। तुम दूसरों के कहने से देखते हो। दूसरो के कहने से करते हो। दूसरे तुम्हारे नही है। तुम

अपने नहीं हो।

मसखरा : अरे, बड़ी ऊंची-ऊंची बातें कर रहा है। किसी ऊंचे आदमी का प्रेत है।

प्रेत : रानी तुम्हारी नहीं है। तुम उसके नहीं हो। हर वक्त डरे हुए हो, स्त्री तुम्हें छोड़कर कहीं और न चली जाय। सोचते हो, उसके स्वामी हो ? गुलाम हो।

राजा : नहीं !

प्रेत : खबरदार मुझसे जो आंखें मिलाईं। तुम किसीको नहीं पहचान सकते। कुछ देखा तो नहीं ?

राजा : चले जाओ।

प्रेत : कहां ?

राजा : हट जाओ।

प्रेत : देख रहे हो, मैं कांप रहा हूं। क्योंकि तू भयभीत कांप रहा है। तू अन्धा है तभी मैं प्रेत हूं। अब तक मैं बदला लेने तुम्हारे पास क्यों नहीं आया ? कभी सोचा इसे ? अब तक मैं कहां था ?

राजा : चीखो नहीं।

प्रेत : चाहता हूं, सोया हुआ सारा राजमहल जाग जाय। तेरी सारी सेना, सारे पहरेदार, अंगरक्षक जाग जायं।

राजा : कहां हो मेरे सारे अंगरक्षक ? सेनापति, मन्त्री, द्वारपाल-दुर्गपाल ?

प्रेत : अपनी रानी को भी पुकारो। शायद वह आ जाय।

राजा : मेरे पास आने की कोशिश मत करना।

(कटार निकाल लेता है।)

प्रेत : मुझसे डरते हो ?

राजा : कौन ?

प्रेत : कोई नही । मैं अकेला । तुम अकेले । तूने जिन्दा रत्नजोति को जमीन मे गाडना शुरू किया था, तेरी स्त्री ने नफरत से मुझपर थूका था । (दिखाता हैं) यह देख उस घृणा का निशान । इसे देखा तो राजमहल मे भूकम्प आ जाएगा । यह घाव मेरा है । यही हूं मैं । यही है मेरी ताकत ।

राजा : तू नही जानता मेरी ताकत ?

प्रेत : वही मैं हूं ।

राजा : क्या ?

प्रेत : मैं ?

राजा : किसका प्रेत है ?

प्रेत : तेरा ।

राजा : बकवास बन्द करो ।

मसखरा : वैसे बकवास दोनों कर रहे है ।

(अचानक रानी आती है । प्रेत अदृश्य हो जाता है ।)

राजा : कहां गया ? कहा है ? कहा है तू ?

रानी : (सभय आश्चर्य से) क्या है ? किसे ढूंढ रहे है ? कौन आया था यहा ? क्या है ? मुझे इस तरह क्यो देख रहे है ? क्या हुआ ? बताइए, क्या है ? यहां कौन आया था ?

मसखरा : अब सम्हालो ।
जागो ।
पानी में लगी आग,
भागो भागो ।

राजा : नही । यहा कुछ भी नहीं हुआ । यहां कोई नही आया । केसर…।

रानी : यह केसर नाम आपके होठों पर कहा से आया ?
राजा केसर किसी चिडिया का नाम हो सकता है।
रानी : बहकाने की कोशिश मत कीजिए।
राजा : *केसर किसी भी स्त्री का नाम हो सकता है।*
रानी : मै भी एक स्त्री हू ।
राजा : तुम्हारा भी नाम केसर हो सकता है।
रानी : मेरा नाम रानी रूपमती है।
राजा : हम वही नही है जो वर्तमान है या सामने दीख पडते है। हमारी जड जीवन की इस सनातन धरती मे बहुत गहरी है।
मसखरा · जब आदमी घबडा जाता है तब ऊंची-ऊंची बातें करने लगता है। मिसाल के तौर पर देखिए न !
रानी · अभी इस समय की बात पूछ रही हूं।
राजा · कोई और बात करो।
रानी : वहां क्या हुआ है ?
राजा कोई जरूरी है तुम्हें सारी बात बताई जाय ?
रानी : तुम राजा ही नही, मेरे पति हो। मैं तुम्हारी प्रजा भी हू और पत्नी भी। जो तुम हो, उसीका प्रकाश मैं हू।
मसखरा : रानी मुहजोर राजा गरम है। एक को न लाज न दूसरे को शरम है।
राजा : क्या जानना चाहती हो ?
रानी : वही जो तुम जानते हो और मुझसे छिपा रहे हो।
राजा : अगर वह बताने लायक नही हो ?
रानी : मैं आदि मे अन्त तक सुनना चाहती हूं।
राजा : आदि मैं हूं। अन्त तुम हो।

रानी : और बीच मे ?

राजा : तुम्हारे कान से उस तरह हजारा मोती का गायब होना कितना रहस्यमय था। तुम्हारे हठ के कारण मैं रूप बदल-कर न जाता पता लगाने, न···

रानी : आगे··· ।

राजा : वस और कुछ नही।

रानी : चीखते क्यों हो ! नही बताना चाहते न बताओ।

राजा : तो सुनो, नही बताना चाहता।

रानी : तो सुनो, मैं जानकर रहूगी, नही तो प्राण दे दूगी ।

राजा : अगर वह बताने लायक नही हो ।

रानी : ऐसा कुछ नही हो सकता ।

राजा : उसका वचन है—यदि मैं उस बात को किसी से कह दूगा तो उसी क्षण पत्थर हो जाऊंगा। मैंने उसे वचन दिया है।

रानी : वचन मुझे भी दिया है ।

राजा : कैसा ? कब ?

मसखरा : वाह-वाह ! क्या जोड़ी बनाई है भगवान ने । एक का मुह दूसरे का कान । एक की आंखें तो दूसरे की जबान ।

राजा : हठ मत करो । उस बात के बताने में हमारा नाश है ।

रानी : जो सच्चाई है, उसी के छिपाने में सर्वनाश है।

राजा : मैंने जो देखा है, वह भयानक है ।

रानी : जब तक वह रहस्य बनाकर रखा जाएगा, तभी तक भयानक लगेगा ।

राजा : मैने जो देखा··· ।

रानी : वह भ्रम हो सकता है। कोई बुरा स्वप्न हो सकता है।

राजा : पूर्वजन्म में ·· ।

रानी : पूर्वजन्म को देख नही सकते, उसे जी नही सकते, बता नही सकते, तभी पूर्वजन्म की कहानी गढ़ते हैं।

राजा : वह सच है। मैंने उसे अपनी आखो से देखा। मैंने भोगा है। साक्षी हू।

रानी : साक्षी होते तो इस तरह चीखते नही। शात हो जाते। तुम्हारी मौन भाषा मैं समझ जाती। सब रहस्यमय बनाकर मुझे भी अशान्त किया।

राजा : मैं बताकर पत्थर हो जाऊं, यही चाहती हो ?

रानी : बताकर कोई पत्थर नही होता, निर्मल हो जाता है। दूसरे भी नहा-धो उठते हैं।

राजा : तुम पर विश्वास करूं ?

रानी : अपने-आप पर करो।

राजा : तो सुनो, कल प्रातःकाल उस शिविर के नीचे बहती हुई गंगा के तट पर हम लोग चलें। वही तुम्हे यह बात बताकर मैं सदा के लिए पत्थर का हो जाऊंगा। चलो।

रानी : *तैयार हू।*

राजा : एक बार फिर से सोच लो।

रानी : सोच लिया है।

राजा : जिस स्त्री ने हठ किया है उसने दुख पाया है।

रानी : जिस पुरुष ने हठ किया है उसने कष्ट उठाया है।

राजा : सुनो।

रानी : मैं और कुछ नही सुनना चाहती।

(रानी गुस्से में भीतर जाने लगती है, राजा उसे रोकता है।)

राजा : रानी !

रानी : तुम्हारी रानी मर गई। हटो, मेरा रास्ता छोड दो।

(मन्त्री आता है।)

राजा : नही, रानी क्यों मरेगी। रानी का राजा ही मरेगा।

मन्त्री : यह मैं क्या सुन रहा हू महाराज !

राजा : मन्त्री विजयसेन, तुम आ गए। अच्छा हुआ। सुनो, मेरा अन्त समय आ गया।

मन्त्री : क्या कह रहे हैं महाराज !

राजा : मोह और भावुकता से मुझे मत देखो। इसका अर्थ आज मुझे मालूम हो गया है। वह देखो, मेरे प्राणों से प्यारी मेरी रानी मेरी जान लेने के लिए खडी है। मैं अपने जीवन के एक रहस्य को बताकर उसी क्षण पत्थर हो जाऊगा।

मन्त्री : नहीं, यह असम्भव है महाराज।

राजा : रानी के लिए सम्भव असम्भव कुछ नही है।

मन्त्री : राजा केवल रानी के लिए नही है।

राजा : नियति की यही इच्छा है। वरना मै स्त्री के मोह मे इतना अन्धा न हुआ होता।

मसखरा : घबडाइए नहीं, यह नाटक है। राजा-रानी का नाटक। राजमहल का फाटक।

राजा : आज अभी, इसी रात के तीसरे पहर यहां एक घटना घटी है। और मुझपर श्राप सौगन्ध है कि मैं यदि उस बात को किसी से कह दू तो उसी क्षण मरकर पत्थर हो जाऊगा।

मन्त्री : महारानी, ऐसा हठ मत करो। महाराज का जीवन उस बात से कहीं ज्यादा मूल्यवान है।

(रानी जैसे कोप-भवन में बैठ गई है।)

राजा : सब बेकार है। मौत के अलावा अब मेरे पास और कोई

चारा नही। जाओ, राजद्वार पर घोषणा कर दो कि राजा अंगध्वज, अपनी रानी के हठ से प्राण त्यागने जा रहे है। जाओ, मोह मे मत पड़ो।

(राजा, रानी और मन्त्री जाते है। सारे पंछी गाना शुरू करते हैं।)

भूल गई है नारि आने कै आनँ कीन्हा।
कातैं मोटा सूत कातन को चाहै झीना॥
लहंगा पाछे जरै चूल्ह में पानी नावा।
बेटी को है ब्याह गीत नानी के गावा॥
देय महावर आंख पैर मे कजरा भावैं।
ऐसी भोली नारि ताहि का को समुझावैं॥

दूसरा दृश्य

(दृश्य में सारे पंछी खड़े हैं। मसखरा आता है।)

मसखरा : अरी ओ मैना।
शर्म के मारे कहा उड गई?
आ, देख ले अपनी जाति की महिमा।
रानी अपने हठ के आगे
जान ले रही राजा की।
त्रिया चरित्र जाने नही कोय
खसम मारि कै सत्ती होय॥

(सब पंछी गाते हैं।)

भूल गई है नारि आन के आनें कीन्हा ।
कातैं मोटा सूत कातन को चाहै झीना ॥
देय महावर आंख पैर में कजरा लावै ।
ऐसी भोली नारि ताहि का को समुझावै ॥

तोता : अरी, ओ री मैंना
लाज के मारे कहां छिप गई ?

(मैंना आगे आती है ।)

मैंना : बस बस बस !
बहुत हुई बकवास तुम्हारी ।
मेल दिखाकर भाग यहां से ॥
पुरुष जाति कितनी बदमाश ।
अब मैं करूंगी पर्दाफाश ।

(राजा रानी और मन्त्री तीनों चलते हुए दिखते हैं ।
सब पंछी गाते हैं—)

रानी का देखो गुमान
राजा को मारन चली ।

मसखरा : रानी का हठ करने
राजा जाता मरने

सब पंछी : रानी का देखो गुमान
राजा को मारन चली

(पंचम और गंगा दायीं ओर दिखते हैं ।)

पंचम : अरी गंगा ! मैं तुझे कब से ढूंढ रहा हूं ।

गंगा : मैं खाली बैठी हूं क्या ?

(गंगा अपने केश सजा रही है ।)

पंचम : मैं कब से खेत में हल चला रहा था ।

गंगा · मैं नदी मे कपड़े धो रही थी।
पंचम मैं खेत मे तेरा इंतजार कर रहा था।
गंगा . मैं खाली बैठी हू क्या ?
पंचम हे ! तू सीधे मुह क्यों नही बोलती ?
गंगा हा, तेरा मुह बड़ा सीधा है।
पंचम अरे तो क्या हुआ ?
गंगा : जो मैंने देखा मेरा कलेजा फट गया।
पंचम ला, मैं सुई-धागे से सिल दू।
गंगा : चुप रह, चापलूस कही का।
पंचम · देख मुझे गुस्सा मत दिला। तू नही जानती मेरा गुस्सा।
गंगा : तू भी नही जानता मेरा गुस्सा। मारूंगी ऐसा धक्का जा
गिरेगा कलकत्ता।

(सब पंछी गाते हैं।)

लगिगै जोवनवा कै धक्का
बलम कलकत्ता निकरि गै।
सोने की थाली मे जेवना परोस्यो
जेवना न जेवें फुलावें गलुक्का
बलम कलकत्ता निकरि गै।

पंचम · अरे तो ऐसा हुआ क्या ?
गंगा : तुम्हारे जान को कुछ नही हुआ।
पंचम क्या हुआ ?
गंगा : नदी किनारे मैंने देखा
पानी पीने बकरी आयी
सब पानी पीकर चली गयी।
पंचम : तो ?

गंगा : पर इक बकरी
पानी पी उत खड़ी रही ।

पंचम : ऐसा क्यों भाई, ऐसा क्यों ?

गंगा : उसने देखा, नदी धार में सुंदर फल इक बहता आया ।

पंचम : जिसे देखकर बकरी का मन ललचाया ।

गंगा : वह मन में बोली—

पंचम : हाय खाने को वह फल किसी तरह मिल जाता तो जी रह जाता, मन भर जाता ।

गंगा : बस, वह जी ललचाये
नदी किनारे खड़ी रही

पंचम : और उधर पहुंचकर अपने घर देखा ।
अरे इक बकरी गायब
उसकी यह हिम्मत
करूं मरम्मत ।

गंगा : चला तेज कदमों से बकरा ।

पंचम : नदी किनारे उसको पकरा ।
ओ री बकरी अकल की सकरी
यहा खड़ी क्यों ?

गंगा : बकरी बोली —

पंचम : हे प्राण प्यारे
जगत से न्यारे मेरे बकरे
मैं तेरे संग घर चलूं तभी
जब तुम मेरे को वह फल ला दो ।

गंगा : ठीक कहा ।
वह था उसका प्रेम

पंचम : प्रेम नही कद्दू।
गंगा : चुप रह बुद्दू।
पंचम : लो चुप हो गया।
गंगा : बकरा बोला—
पंचम : फल लेने मैं जग में जाऊं
नदी धार मे डूब मरा तो ?
गंगा : यह कहकर निर्दयी हृदयहीन बकरा, बकरी को मार
लगा। हाय। हाय।
(गंगा रोने का अभिनय करने लगती है। पंचम अप
साफे को उतार उसके आंसू पोंछने लगता है। कप
में से आंसू गारता है।)
गंगा : (सहसा) मत छुओ मुझे। पुरुष जात इतनी निर्दयी है
जानवर है। मक्कार है। थुडी है। धिक्कार है।
पंचम : अरे रे रे, तू मेरी सरकार है।
गंगा : मैं अब तेरे पास नही रहूंगी।
पंचम : क्या कहा।
गंगा : मैं अब तुझसे शादी नही करूंगी। नही करूंगी। नही करूंगी
पंचम : इतना गुमान।
गंगा : कहां है तुझमे ईमान ?
पंचम : अच्छा।
गंगा : मैंने चुनरी लाने को कहा था, कहा है मेरी चुनरी ?
पंचम : चुनरी जब शादी होगी तो मिलेगी।
गंगा : मैंने मुंदरी गढाने को कहा था, कहा है मेरी मुंदरी ?
मुदरी माने अगूठी। नही समझे, अंग्रेजी मे समझाऊं ?
पंचम : अरे फसल काटने दे, मुदरी गढा दूंगा।

हम सगुन पछी
(लिटिल थियेटर ग्रुप, दिल्ली)

मसखरा
(अभिनव, कानपुर)

पचम (अभिनव, कानपुर)

गगा और पचम (जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली)

पचम और गगा (लिटिल थियेटर ग्रुप, दिल्ली)

राजा-रानी (लिटिल थियेटर ग्रुप, दिल्ली)

रानी (अभिनव, कानपुर)

राजा-रानी (जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली)

वृद्ध और राजा (लिट्टिल
ग्रुप, दिल्ली)

राजा और वृद्ध (जानकी देवी
महाविद्यालय, दिल्ली)

गंगा : लालगंज के मेले मे ले जाने को कहा था ।
पंचम : अरे बैलगाड़ी टूट गई तो मैं क्या करूं ?
गंगा : अपना सिर फोड़ो ।
पंचम : ला पत्थर, मैं अपना सिर फोड लेता हू । तुझे मेरी मजबूरी का पता नही, मेरी गरीबी का पता नहीं । बाढ आई फसल बहा ले गई । सूखा पडा, सब सत्यानाश हो गया । अकाल आया···
गंगा : तो मैं क्या करूं ? बाढ आएगी । सूखा पडेगा । अकाल आएगा । पर हमारी जिन्दगी तो लौट कर नही आएगी ।
पंचम : तो ला पत्थर, मैं अपना सिर फोड लू ।
गंगा : मैं कहा से लाऊं ?
पंचम : अच्छा, मैं लाता हूं ।

(पंचम जाता है । राजा को पकड़कर लाता है ।)

पंचम : ले, इतना बडा पत्थर ले आया ।
गंगा : अरे, ई तो पूरा पहाड़ है ।
पंचम : तू मुझे समझती क्या है ?
गंगा पहाड तो हनुमान जी को उठाते सुना था ।
पंचम : हनुमान जी मेरे बाबा के बाबा के बाबा के बाबा के बाबा थे ।

(मसखरा बीच में श्रा टपकता है ।)

मसखरा : हनुमान जी मेरे दादा के लकडदादा के सकडदादा के पकडदादा थे ।
गंगा : हे, तू कहां से बीच मे टपक पडा ?
पंचम : दाल-भात मे मूसरचन्द ।
गंगा : चेहरा देखो जैसे लंगूर ।
पंचम : न आम न केला न अंगूर ।

मसखरा अरे सिर क्यों टूटे-फूटे। मैं कर दूं पंचायत।

पंचम जो बिना बुलाए चला आए, वह पंच नही परपंच।

गंगा हम दोनों चाहे झगडें चाहे कटि मरें, तू कौन होता है हमारे बीच आने वाला।

पंचम भागता है कि नहीं।

(दौड़ा लेता है। मसखरा भागता है। दोनों दौड़ाते हैं।)

पंचम हां, तो मैं क्या कह रहा था ? नही, नही, मुझे गुस्से मे कहना होगा। हम दोनों आपस मे लड रहे थे। हां, मुझे याद आया (गुस्से में) तू मुझे समझती क्या है ?

गंगा इस पत्थर मे अपना सिर फोडने जा रहे थे न !

पंचम पत्थर नही, पहाड से सिर टकराने जा रहा हूं।

(गंगा पास आकर देखती है।)

गंगा अरे, यह पहाड नही आदमी है।

पंचम आदमी की शक्ल का पहाड है।

गंगा नही, नही, यह पत्थर नही है।

पंचम पत्थर होने जा रहा है।

गंगा झूठे कही के।

पंचम राम कसम, यह पत्थर होने जा रहा है।

गंगा क्यों ?

पंचम स्त्री के मोह मे।

गंगा झूठ, बिलकुल झूठ।

पंचम पूछ लो। क्यों राजा, मैं झूठ बोल रहा हू ?

(राजा सिर हिलाता है।)

गंगा मैं पूछती हू। क्यों राजा, य· सही है ? अपनी स्त्री के

कारण तुम पत्थर होने जा रहे हो ?

(राजा स्वीकृति में सिर हिलाता है।)

गंगा : देखो, राजा अपनी रानी को कितना प्यार करता है।

पंचम : (अलग से) पुरुष तो प्यार करता ही है। तभी तो मारा जाता है।

गंगा : अपनी स्त्री की बात रखने के लिए प्राण देने जा रहा है।

पंचम : तभी तो पुरुष कहता है—प्राणप्रिये ! तू मेरी जान से भी ज्यादा प्यारी है !

गंगा : यही बात तुम मुझसे कहो।

पंचम : कहने मे क्या है। तीन बार कह देता हू।

(तीन बार कह देता है।)

गंगा : तो यही करके दिखाओ।

पंचम : क्या ?

गंगा : मेरे लिए पत्थर हो जाओ !

पंचम : क्या कहा ?

गंगा : मेरे लिए पत्थर हो जाओ !

पंचम : अरे, पागल तो नही हो गई ! मैं कोई राजा अगध्वज हूं।

गंगा : मेरे लिए पत्थर हो जाओ !

(पंचम भागता है। गंगा पीछा करती है और अपनी बात दुहराती है।)

पंचम : अरे, भागती है कि नही। मारूंगा ऐसा डण्डा कि तेरा माथा हो जाएगा ठण्डा। मै इतना बेवकूफ नही कि एक औरत के कारन अपनी जान गवा दू !

(गंगा बुरी तरह नाराज और ज़िद्दी बच्चे की तरह रोती हुई ज़मीन पर अपने पैर घिसने लगती है। और वही बात दुहराती रहती है। पंचम चीखता है और उसे मारने-पीटने का अभिनय करता है। गंगा का रोना और पंचम का गुस्से से चीखना बढ़ जाता है।)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(सारे पंछी खड़े हैं। मैना एक ओर चुपचाप बैठी है। तोता बड़े गुमान से खड़ा है। मसखरा अपनी दाढ़ी को अपने डण्डे से लपेटता हुआ आता है। उसे देखकर तोता हंस पड़ता है। मसखरा भी हसने की नकल करता है।)

तोता : ऐअ, तू क्यो हंसता है ?

मसखरा : अरे, इसको हंसना कहते है ?

(अजब हंसी दिखाता है।)

तोता : यह हंसना नही रोना है।

मसखरा : वही तो मुझे कहना है। तोता समझता है कि उसकी जीत हो गई। पर यह जानेगा कैसे कि हर जीत मे एक हार होती है। हर हार मे एक जीत होती है। (सहसा) अरे! मैना क्यो वहा रूठ के बैठी है ?

(सारे पंछी गाते हैं। मसखरा ताल दे रहा है।)

मैना रूठ गई ऐसी कि बोला न जाय,
मैना रूठ गई !
हा, मैना रूठ गई ऐसी कि बोला न जाय,
मैना रूठ गई।

नीलकण्ठ : नारि अकेली देखि के सुअना किया विचार।
अब किस विधि इससे बचूं ये है जुलमी नार।
(सब गाते हैं।)

सब : मैना रूठ गई
हां, मैना रूठ गई ऐसी कि बोला न जाय।
मैना रूठ गई।

मसखरा : क्योंकि तोते ने दास्ता दिखाकर यह साबित किया—क्या?
तीन लोक तिहुकाल में, महामनोहर नार।
सब दुख की दाता यही, देखो सोच विचार॥

नीलकण्ठ : चुप रह!
तीन लोक तिहुंकाल मे, महामनोहर नार।
सब सुख की दाता यही, देखो सोच विचार॥

सब : मैना रूठ गई।
मैना रूठ गई ऐसी कि बोला न जाय
मैना रूठ गई।

तोता : मैंने तभी कहा
हे री मुझे मत छेड़
पर जिद्दी तिरिया जात
अपनी कथा देख रूठ गई।
(हंसता है। मैना गुस्से से उठती है।)

मैना : खामोश! अहंकारी निर्दयी पुरुष जात
कुछ है करनी कुछ है कहना।
अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना॥
करने चले तिरिया उपहास।
मैं करती अब पर्दाफाश॥

- - - (मैना के पीछे-पीछे तोता जाता है ।)

नीलकण्ठ : लड़ते हैं, भगड़ते है ।
पर एक के बिना दूसरे तरसते है ।

मसखरा : यह माया मेरी समभ मे नही आती
जितना दाढी काटता हू यह और बढ जाती ।

नीलकण्ठ : अब यहां से तशरीफ का टोकरा ले जाइए ।
मैना की दास्ता शुरू है। कही और जाकर नमक-मिरिच लगाइए ॥

(नीलकण्ठ मसखरे की दाढ़ी पकड़ ले जाता है । सिर पर लोटा, हाथ में कोई गठरी लिये गगा आती है । राजा का मन्त्री पीछा करता है)

मन्त्री : अरे सुनती हो । अरे तेरा ही नाम गगा है । अरे गंगा, ओ री गंगा । अरे बहरी है क्या ? सुनती ही नही । अरे सुनती है रे ! हे रे सुनती है । अरे, इसके कान पर तो जू तक नही रेंगती ।

(गंगा के कान के पास जुआं रेंगा । सामान रखकर सिर खुजलाती है । जुएं को पकड़ती है ।)

गगा : अब बोल । क्या करूं तेरा ? अचार बनाऊं या कूट-पीस-कर मैदा बना डालू । कैसे देख रहा है ! हाथ जोडकर माफी माग रहा है । क्या नाम है तेरा ? जंगली । वाह रे बेटा जगली प्रसाद । तो मेरे सिर को जंगल समभ रखा है । बदमाश कही का । अच्छा, अच्छा, बाबा मारूंगी नही । चल, जंगल मे छोड आती हू ।

(बढ़कर मन्त्री के सिर में डाल देती है ।)

मन्त्री : गंवार, बेवकूफ यह क्या किया ?

(उसके सिर में खुजली मचती है। गंगा हंसती है। फिर मन्त्री के सिर में से जुएं को निकालकर दर्शकों की ओर फेंक देती है।)

मन्त्री : अरे कुछ सुना तुमने ?

गंगा : अरे कुछ कहा तुमने ?

मन्त्री : तुझको राजा ने बुलाया।

गंगा : राजा अब तक जिन्दा है ?

मन्त्री : हा, बिलकुल। पर क्यों ?

गंगा : राजा मरकर पत्थर नही हुआ ?

मन्त्री : नही-नही, वह देख।

(दूसरी तरफ राजा दिखता है।)

गंगा : अरे ! रानी कहा है ?

मन्त्री : यह बात जाकर राजा से ही पूछना।

गंगा : मैं तो तुम्हीसे पूछती, नही तो नही जाती।

(सामान उठाकर जाने लगती है।)

मन्त्री : अरे रे रे ! बात यह हुई कि जैसे पंचम ने तुम्हे मारा।

गंगा : मारा नही दुलारा।

मन्त्री : (अलग से) कमाल है। मार को दुलार कहती है। (प्रकट) अच्छा जो भी हो। जैसे पंचम ने तुझे दुलारा, राजा ने रानी को मारा। रानी को वापस राजमहल भेज दिया। तुझे बुला रहे हैं।

गंगा : क्यो ?

मन्त्री : पता नहीं क्यों।

गंगा : अगर मैं न जाऊं तो ?

मन्त्री : बावरी, क्यो नही जाएगी ? राजा के बुलाने पर प्रजा

जाती है ।

अहोभाग्य, राजा तुझे बुलाएं । राजा से मिलेगी, तेरी किस्मत चमकेगी !

गंगा : अच्छा !

मन्त्री : चलो !

गंगा : चलो !

(दोनों चलते हैं । पंछी गाते हैं ।)

तार काटी तरकुल काटी
काटी बन का खाजा ।
पहन पैर मा घुंघरू
चमकि चलू राजा !

ममखरा : भाऊं माऊं भाऊं माऊं ।
भाऊं माऊं भाऊं माऊं ॥

सब : राजा के रजाई जरै
भइया के दुपट्टा ।
पूस मार घूस मार
मुसरी के बच्चा ॥

(गंगा को संग लिये मन्त्री राजा के पास पहुंच जाता है ।)

मन्त्री : देख लीजिए, गंगा आपके सामने खडी है ।

गंगा : इसे कुछ कम दिखाई पडता है ?

मन्त्री : चुप रह ।

गंगा : तू चुप रह ।

(मन्त्री भागता है ।)

राजा : गंगा, तू आ गई ?

गंगा : (अलग से) पक्का, इसे कुछ कम दिखाई पड़ता है।
राजा . राजा के पास आई है तो कुछ ले आई है ?
गंगा : मक्के की दो रोटी हैं।
एक लोटा पानी है।
राजा . किसके लिए ले जा रही थी ?
गंगा उसी दाढ़ीजार के पूत के लिए।
राजा : तेरी उससे शादी हो गई है ?
गंगा : मेरी शादी उस घनचक्कर के साथ ?
आंख न दीदा
मांगे मलीदा !
राजा . अरे उसे गाली देती है ?
गंगा : उसे न दूं तो किसे दूं। उसी से तो मेरा···।
(लजा जाती है।)
राजा : पर वह तो तुझे मारता है।
गंगा : मैं भी तो उसे मारती हूं।
राजा . कभी भागा भी है ?
गंगा · हक तो है।
(राजा चुप हो जाता है। गंगा अपनी पोटली खोलकर एक रोटी देती है।)
गंगा . एक रोटी उसके लिए।
राजा मैं यह रोटी नहीं खा सकता।
(गंगा रोटी वापस लेकर पोटली में रखती है।)
मसखरा : यही तो बात है, जिसके पास रोटी है वह खा नहीं सकता। जिसके पास भूख है, रोटी नहीं है। किसी के मुंह, तो दाढ़ी नहीं। किसी के पास दाढ़ी है, तो उसके पास मुंह नहीं।

राजा : पंचम बहुत गरीब है ?

गंगा : गरीब नही है। मेरे लिए खाने-पहनने को नही है।

राजा : मैं तेरे लिए खाने-पहनने का इन्तजाम करता हू।

गंगा : मैं औरो की कमाई नही खाती।

राजा : (स्वागत) यह कैसी आश्चर्यजनक है और आकर्षक भी। ये दोनो तत्त्व मुझे भाते हैं। मैं इस तरह नष्ट नही करना चाहता। जिस पछी के पख सुन्दर है और कण्ठस्वर मधुर है उसे पिंजरे मे बन्द करके एक गर्व का अनुभव होता है। विहंग का सौन्दर्य सारे जगल का है। पर स्त्री स्वभाव से बन्धनों को स्वीकार करती है। (प्रकट) ऐ लडकी !

गंगा : मेरा नाम गंगा है।

राजा : जा अपने पंचम को भेज दे। राजमहल मे कोई नौकरी दे दूगा।

गगा : (प्रसन्न) सच ! उसे नौकरी मिल जाएगी। वह परदेस मे धन कमाएगा। मेरे लिए पियरी ले आएगा। मुदरी गढाएगा।

(गंगा खुशी से नाचती हुई भागती है। सामने पंचम को देख घबड़ा जाती है।)

पंचम : कहा थी अब तक ? यह कोई समय है रोटी खाने का ? ले जाव, हट जाव मेरी आखो के सामने से !

गंगा : हे खबरदार ! आगे जो जबान चलाई।

पंचम : क्या ?

गंगा : जाकर उसे आंख दिखाओ जो तुमसे ब्याही हो। मैं चली। राम राम।

(जाने लगती है। पंचम दौड़कर उसका हाथ पकड़

लेता है।)

पंचम : एक बार नहीं, न जाने कितनी बार हमारी शादी हुई।

गंगा · शादी हुई। और टूटी।

पचम : फिर हुई।

गंगा : फिर टूटी।

पंचम रोज मिलते है।

गगा : रोज बिछुडते है।

पचम : इसका कोई अन्त है रे ?

गंगा : आज भूख नही लगी ?

पंचम : गुस्सा लगा है।

गंगा : अरे राजा से मिलकर आई हूं। उसने खुद बुलाया।

पंचम : ओह, तो यह वजह है।

गंगा . अरे तुम समझते क्या हो मुझे ? लो, सीधे से रोटी खा लो।

(पंचम रोटी खाता है। गंगा जमीन पर रेखा खींचती है।)

गंगा : जब मैं अकेली होती हू तो अपने एक बल से सीधी राह चली जाती हू। मुडकर दायें-बायें भी नही देखती। पर देखती हूं कही कुछ अकेला नही है। सबका एक जोडा है।

(गंगा अपनी दुनिया में खोई हुई नीचे जमीन पर रेखा खींचकर बाघा गोटी का खेल खेलती है।)

मखसरा . यह कुछ कहना चाह रही है पर बेचारी कह नही पा रही है। जरा टेलीफोन लगाकर सुनू तो। (अपनी दाढ़ी गंगा की ओर बढ़ाता है) आहा ! यह कहना चाह रही है— शक्ति जब अकेली होती है तो लडकर जलाती है। जब दो मिल जाते है तो सगुन हो जाता है।

गंगा : बाघ हो या शेर हो। इस रेखा पर पडोगे तो जल जाओगे। कितनी बार तो समझाया। या तो भीतर कोठे में रहो या सीधे बाहर निकल जाओ।

(वह एक टांग पर उछल-उछलकर बाघा गोटी खेल रही है।)

गंगा : अरे, फेंका इधर, चला गया उधर। उल्लू कहीं का। एक ओर मैं। दूसरी ओर तू। एक ओर अर्जन। दूसरी ओर वर्जन। एक आचार—दूसरा विचार।

पंचम : अरे क्या बक-बक लगा रखी है ?

(पंचम खा-पी चुकता है। गंगा का खेल खत्म हो जाता है।)

गंगा : मेरी दादी थी। मुह मे एक भी दांत नही (नकल करती है) ऐसे बोलती थी। हा। बचपन में जब बाघा गोटी खेलती थी तब दादी यही सब बडबडाती थी। (सहसा) अब मैं दादी हूं।

पंचम : किसकी ?

गंगा : तुम्हारी।

(विराम)

पंचम : यह बता राजा ने क्या कहा ?

गंगा : यह पूछो राजा ने क्या नही कहा। मैं चाहूं तो तुम्हें जेल भेजवा दूं।

पंचम : निकालूं डण्डा। करूं तेरा सिर ठण्डा।

गंगा : मुसण्डा। मुचण्डा। पण्डा। सरकण्डा।

(गंगा भागती है। पंचम उसे पकड़ नहीं पाता।)

गंगा : अच्छा, ले पकड़ ले। अरे मैं तो हंसी कर रही थी। देखो

हार गए तो रूठ गए। तोबड़ा जैसे मुंह बनाकर बैठ गए। (सहसा) सुनो, राजा तुम्हें नौकरी देगा।

पंचम (प्रसन्न) अच्छा!

गंगा : पर मैं जाने नहीं दूंगी।

पंचम : क्या?

गंगा : मैं तुम्हारे बिना एक दिन भी नहीं रहूंगी। जहर खा लूंगी।

पंचम : अब देखो तमाशा। राजा से मेरी नौकरी-चाकरी खुद पक्की कर आई और अब खुद जहर खाय रही है। आगे चले तो डण्डा मारे, पीछे चले दुलत्ती!

गंगा : हां, हां, मैंने वह भी कही, अब यह भी कहती हूं। परदेस नहीं जाने दूंगी।

पंचम अरे भाग जगी, राजमहल में नौकरी लगी। गरीबी दूर हो जाएगी। पियरी रंगेगी। मुंदरी गढ़ेगी। तुझे भी वहीं बुला लूंगा। खूब मौज उड़ाएंगे, रस-मलाई खाएंगे।

गंगा : सूखी-रूखी खाऊंगी। नहीं जाने दूंगी।

पंचम मैं जाऊंगा। क्यों राजा से कहा? नहीं जाऊंगा तो राजा बंधवाकर ले जाएगा।

गंगा यही तो नहीं पता। तब मांगा क्यों? अब मना क्यों कर रही हूं? किससे क्यों लड़ती हूं। क्यों किस बात पर रोती हूं? तुम जिद करते हो तो जाओ। मैं जिद करती हूं तो मुझे मारते हो। जाओ खुशी से जाओ। तुम्हें नजर न लगे।

(अपनी आंख का काजर उसके गाल पर लगा देती है।)

पंचम : राम-राम।

(पंचम जाता है। गंगा निःशब्द खड़ी रह जाती है।

(पंछी गाते हैं—)

सारी रैन मोर संग जागा।
भोर भये तो बिछुड़न लागा॥
उसके बिछुड़ते फाटत हिया।
ए सखि साजन ना सखि दिया॥
सोभा सदा बढावन हारा।
आखिन ते छिन करूं न न्यारा॥
आठ पहर मेरा मन रंजन।
ए सखि साजन ना सखि अंजन॥

दूसरा दृश्य

(राजमहल। मन्त्री पुकारता हुआ आता है।)

मन्त्री : महारानी ! महारानी !

(रानी आती है।)

मन्त्री : राजमहल मे जो नया नौकर भेजा है राजा ने, क्षमा हो, इसका एक रहस्य है ?

रानी : बिना किसी पूर्व सूचना के तुम्हारे यहा आने का मतलब ?

मन्त्री : भला नाम है पंचम। पंचम चौकीदार। राजा ने चौकीदार बनाकर भेजा है। जंगल में राजा करे मंगल। रंगमहल में चौकीदारी हो रानी की। उस दिन मैंने न बचाया होता तो राजा टुकडे-टुकडे कर देता।

रानी : मन्त्री, तुम यहां किसलिए आए ?

मन्त्री : आपके दर्शनों के लिए ।

रानी : दर्शन हो गया । अब जा सकते हो ।

मन्त्री : मैंने सोचा—राजा बिना रानी को बहुत अकेला-अकेला लगता होगा । देखिए न, राजा ने आपको अकेले राजमहल में वापस भेज दिया और खुद प्रजा के जंगल में शिकार खेल रहे हैं । मुझे भी अपने पास से हटा दिया । तो मैं आपके दर्शनों के लिए आया था ।

रानी : बिना राजा के रानी के दर्शनों का कोई अर्थ नहीं ।

मन्त्री : कितने दिन हो गए, राजा नहीं लौटे । और चौकीदार बनाकर भेजा उसी मूर्ख किसान को जो एक भोली-भाली औरत को उस तरह पीट रहा था । जिसे देखकर राजा का सारा ईमान ही बदल गया । कहा जा रहे थे, गंगा तट पर रहस्य बताने···मैं न होता तो अब तक आप ज़िन्दा न बचती ।

रानी : बकवास बन्द करो ।

मन्त्री : महारानी, आप बहुत सरल-सीधी हैं । आप पर जुल्म हुआ है । एक भयानक घटना घटी है ।

रानी : घटनाओं से कहीं बड़ा है हमारा जीवन ।

मन्त्री : दर्शन की भाषा नहीं जानता । इतना ही पता है कि जीवन की हर घटना तन-मन पर अमिट छाप छोड़ जाती है । मनुष्य उन्हें कभी नहीं भुला पाता ।

रानी : कहना क्या चाहते हो ?

(मन्त्री चुप है ।)

रानी : अपनी बात का कोई उदाहरण दे सकते हो ?

मन्त्री : किसी शान्त भरे तालाब में एक पत्थर का टुकड़ा फेंका

जाय तो उसमे उतनी लहरें उठेंगी कि मानो तालाब कांपने लगा है।

रानी : पर सागर समुद्र मे ?

मन्त्री : मुझे उसकी कल्पना नहीं।

रानी : समुद्र में हर क्षण तरंगें उठा करती है और तट से टकराती है। स्त्री जीवन समुद्र की तरह है। कांपेगा वही जो तालाब की तरह छिछला और तृण की तरह हल्का है।

(मन्त्री हंसता है)

रानी : लगता है, स्त्री नहीं देखी। देखी भी तो पहचाना नही। उसे रहस्यमयी कहा। क्योकि वह तुम्हारे तर्क से परे है।

मसखरा : वाह-वाह-वाह, क्या फिलासफी झाड़ी है।
नारी जीवन की सच्ची तस्वीर उतारी है।
पर तब काहे हजारा मोती के लिए अपने राजा से लडी ?
काहे उसे पत्थर तक बनाने के लिए उठ खड़ी हुई ?
भइया रे, तिरिया की माया जाने कौन !

मन्त्री . मेरी जरा-सी हंसी से समुद्र में तूफान आ गया।

रानी : यह किसने कहा—समुद्र मे तूफान नही आता। तूफान उसकी सांसों मे है।

मन्त्री : उसी तूफान के दर्शन करने आया हूं।

रानी : तूफान उसके भीतर रहता है।

मन्त्री : आप सत्य कहती है महारानी, स्त्री के आहत सम्मान का वह तूफान आपके अन्दर देख रहा हूं।

रानी : क्या ?

मन्त्री : आपके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता हूं।

रानी : श्रद्धा वाचाल नहीं होती।

मन्त्री राजा द्वारा आप पर किए गए अपमान की सबसे अधिक चोट मेरे दिल पर है।

रानी · राजा मेरे पति हैं। उनका कोई भी व्यवहार मेरे लिए न्याय है।

मन्त्री : राजा ने क्यों नहीं बताया, वह रहस्य की बात क्या थी? राजा ने भय दिखाकर सब पर पर्दा क्यों डाल दिया?

रानी : यह सवाल मेरा है।

मन्त्री : हमारा है।

रानी : मैंने उत्तर पा लिया।

मन्त्री : क्या?

रानी : राजा मेरे पति ही नहीं, इतने बड़े देश के प्रजापालक हैं।

मन्त्री : पर वह रहस्य आपका है।

रानी : होगा।

मन्त्री : राजा ने उस रहस्य को अपने दिल मे रखकर आपको अपने से दूर कर दिया।

रानी : चुप रहो।

मन्त्री : ठीक है, मैं चुप हो जाऊंगा। उस रात वह बूढा यहां··· इस जगह···हा इसी जगह राजा से जो रहस्य बता रहा था, मैं वहा छिपा सब कुछ सुन रहा था।

रानी : क्या?

मन्त्री : आपकी सौगंध, एक शब्द भी झूठ नही बोलूगा (इधर-उधर देखकर) रहस्य बताने से पहले बूढ़े ने राजा से शपथ ली कि यदि राजा तू इस बात को किसीसे कहेगा तो उसी क्षण पत्थर हो जाएगा। तब उसने बताया— आज रात राजा अंगध्वज को एक प्रेतात्मा मार डालेगा।

(रानी घबड़ा जाती है।)

मन्त्री : राजा ने कारण पूछा। तब उसने बताया, उस प्रेतात्मा और राजा का पूर्वजन्म का वैर है। आज अपनी मौत का बदला लेने आ रहा है।

(रानी भयभीत हो जाती है।)

मन्त्री : राजा अंगध्वज पूर्वजन्म के मणिसेन नामक साहूकार थे। आपका नाम तब केसर था।

रानी : केसर।

मन्त्री : हां, धर्मपत्नी केसर।

रानी : राजा के मुंह से तब यही नाम निकला था—'केसर'।

(सन्नाटा)

मन्त्री : एक बार मणिसेन सौदागर अपने व्यापार के सिलसिले में कहीं दूर देश गया था और उसकी स्त्री केसर अकेली थी। उसकी सेवा में रतनजोति नाम का...।

रानी : छिः छिः छिः ! बस करो। ये बेसिर-पैर की कहानिया तुम लोगों ने गढ़ी हैं।

मन्त्री : रानी, सुनो ! सुनो !

रानी : कहीं कोई प्रेतात्मा नहीं। यह अपने मन का भय संस्कार है।

मन्त्री : प्रेतात्मा ने सोचा—राजा को मारकर रानी से बदला नहीं होगा।

रानी : तेरी कपट चाल यहां नहीं चल सकती।

मन्त्री : उसने तब बदला लेने का यह भयंकर उपाय सोचा—राजा को, रानी के पूर्वजन्म का रहस्य बताकर आजन्म राजा से रानी को घृणा दिलाई जाय।

रानी : यह झूठ है। तेरी कपट चाल है।

मन्त्री : मैंने कानों से सुना है। आखों से देखा है।

रानी : जो जैसा होता है, वही सुनता है, वही देखता है।

मन्त्री : मैं सत्य कहता हूं।

रानी : मेरा सत्य तुम कहोगे ? जिसे जीवन का पता नहीं, वही शून्य भरने के लिए प्रेत की कल्पना करता है।

मन्त्री : आप देखती नहीं ! तब से आपके प्रति राजा के व्यवहार मे एक बुनियादी फर्क आया है। आपके बिना पहले एक क्षण भी नहीं रह सकते थे। अब इतने दिनों से आपको यहा अकेली छोड़कर···।

रानी : स्त्री का प्रयोजन पुरुष को बांध रखना नहीं है।

मन्त्री : पर यह राज-परिवार है। राजा को अपने घर-परिवार में रहना चाहिए।

रानी : जिस मात्रा मे हम पारिवारिक हो जाते हैं, उसी मात्रा में हम जगत व्यवहार के लिए अयोग्य बन जाते हैं। राजा का घर-परिवार पूरा देश है।

मन्त्री : अपने को शब्दजाल में छिपाकर अपने साथ छल कर रही हैं।

रानी : कोई है !

(सन्नाटा)

मन्त्री : सारे दास-दासियों को आज छुट्टी दे दी गई है। मैं खड़ा हूं आपकी सेवा मे। आज्ञा दीजिए।

रानी : यहा से चले जाओ।

मन्त्री : यह आज्ञा नहीं, यह तो गुस्सा है।

रानी : ओह ! तो तेरी यह योजना है।

मन्त्री : आपको कुछ देने आया हू।

रानी : कुछ है भी तेरे पास।

मन्त्री : आप इस राजभवन को त्यागकर मेरे साथ चलिए। मैं आपके लिए एक नया राज्य बनाऊंगा।

मसखरा : वाह-वाह ! मन्त्री मजेदार है। रंगा हुआ सियार है। बातें है कि रसगुल्ला। देखो मचाओ मत हल्ला।

रानी : विश्वासघाती ! मैं अकेली नही हू।

(कमर से कटार निकाल लेती है।)

रानी : कायर !

(मन्त्री हंस रहा है।)

रानी : तू मेरा कुछ नही कर सकता।

मन्त्री : ये सुंदर कोमल हाथ इसलिए नही बने है।

रानी : जो कोमल है वही अजेय है।

(मन्त्री बढ़कर रानी का हाथ पकड़ लेता है। संघर्ष होता है। पंचम दौड़ा आता है। मन्त्री को दबोच लेता है। पर इस बीच रानी को कटार लग चुकी है। वह गिरती है। मन्त्री कटार छोड़कर भागता है। पंछी गाते हैं—)

तिरिया जगत महान है
राखा धर्म बचाय।
शील धर्म के कारने
जीवन दिया गंवाय ॥

मैना : सांच कहूं मै सूगना
मति तू झूठी जान।
पुरुष नारि के बीच मे
साक्षी श्री भगवान ॥

सब : साच कहू मैं सूगना मति तू झूठी जान।
पुरुष नारि के बीच में साक्षी श्री भगवान ॥

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(रानी बेजान पड़ी है। पास राजा खड़ा है। पंचम दूर खड़ा है। पंछी गाते हैं—)

चल चकई वा सर विषय जहं नहिं रैन बिछोह
रहत एकरस दिवस ही सुहृद हंस संदोह।
सुहृद हंस संदोह कोह अरु द्रोह न जाके
भोगत सुख अंबोह मोह दुख होय न ताके।
बरनै कवि बैताल भाग्य बिनु जाइ न सकई
पिय मिलाप नित रहै ताहि सर चल तू चकई।
चल चकई वा सर विषय जहं नहिं रैन बिछोह।
रहत एकरस दिवस ही सुहृद हंस संदोह॥

नीलकंठ : इस दुख को हम छोटा नहीं समझेंगे।

पहला : मस्तक उठाकर इसे स्वीकार करेंगे।

दूसरा : विश्वासघात की आग से हम भस्म नहीं होंगे।

तीसरा : आंसुओं में डूब जाय तो दुख का अपमान होगा।

चौथा : जो कुछ हमने रचा है दुख की सहायता से रचा है।

पांचवां : जिसे हमने दुख से नहीं पाया वह हमारा नहीं है।

(सब दृश्य बन जाते हैं।)

राजा : यह कैसे हुआ ? क्यों हुआ ?

मसखरा : मैं बताऊं क्या हुआ ? एक जंगल में चार सियार थे। एक ने कहा—क्या हुआ ? सब बोल पडे—हुक्का हुआ, हुक्का हुआ।

राजा : जो मैंने सुना, जो देख रहा हूं··· ।

नीलकंठ : सब सच है।

राजा : मैं अपनी रानी बिना नही रह सकता।

मसखरा : वाह-वाह, क्या उल्टी माया है। जब रानी जिन्दा थी तो पास नही फटकते थे, अब देखो कैसा पियार उमडा पड रहा है।

(पंछी गाते हैं—)

हाय दई अति निर्दयी
कैसी बिछुरन कीन।
रानी बिनु तलफत मरूं
जैसे जल बिनु मीन॥

राजा : मैं अकेले जिन्दा नही रह सकता।

मसखरा : अरे, अकेले काहे रहोगे। दूसरी बियाह लाना। तुम्हे रानियों की कौन-सी कमी पडी है ? दो-दो रुपये में तो मिलती हैं।

(रानी के सिर को अपने अंक में रखकर मानो निःशब्द विलाप करने लगा है। पंछी फिर वही गान दुहराते हैं—हाय दई··· ।)

पंचम : हे नीलकंठ भगवान ! कोई उपाय करो।

नीलकंठ : उपाय है।

पंचम : है ?

नीलकंठ : राजा अपनी आयु का आधा हिस्सा रानी को दे दे। फिर यह जी आएगी।

राजा : (उत्साह से उठकर) तैयार हूं।

नीलकंठ : तो लो यह जलपात्र। थोड़ा-सा जल अपनी अंजुरी में लो।

(राजा जल लेता है।)

नीलकंठ : कहो कि मैं अपनी आयु का, अपने जीवन का आधा भाग अपनी रानी को देता हूं। यह मेरे जीवन का आधा भाग लेकर जी जाय।

(राजा यही दुहराता है।)

नीलकंठ : राजा, ध्यान से सुनो। इस जलपात्र को सदा छिपाकर अपने पास रखना। कभी ज़रूरत पड़ने पर इसी जल से अपनी दी हुई उम्र वापस ले सकोगे। चलो, जल छिड़क दो। सावधान! अगर अपने इस दान को कभी भी अपने मुह से कह दोगे तो इसका फल नष्ट हो जाएगा।

राजा : ऐसा नहीं होगा।

नीलकंठ : एवमस्तु!

(राजा रानी पर अंजुरी का जल छिड़कता है, रानी जीवित हो उठती है। पंछी गाते हैं—)

सोभा सदा बढ़ावन हारा
आंखिन ते छिन करूं न न्यारा।
आठ पहर मेरा मन रंजन
ए सखि साजन ना सखि अंजन।

रानी : महाराज, आप कब आए?

राजा : तुम सो रही थी, मैं चुपके से आ गया।

(सब हंसते हैं।)

रानी : मैं यहीं सो गई थी?

राजा : तो क्या हुआ ?
रानी : आप सब मुझे इस तरह क्यों देख रहे है ?
राजा : आओ भीतर चलो !
रानी : मैं कहां गई थी ?
राजा : कही नही !
रानी : मैं कहा थी ? कहा से आई हू ? मैं कौन हू ?
राजा : अपने-आपको जानना दुखदायी है।
रानी : नहीं !
नीलकंठ : जब अपने-आप का बोध होता है, तब फिर किसी बात का भय नही रहता । यह जानना, टुकड़ों को जोडना, संग्रह करना नही, आलोकित हो जाना है। जैसे सुबह हो जाती है। हे प्रकाश ! सबमें तुम्हारा आविर्भाव सम्पूर्ण हो। अपने साथ मुझको संयुक्त करो। तभी मेरा अपने-आप से मिलन होगा।
मसखरा : यह देखो, यह बेमतलब आइ जाते हैं फिलासफी झाडने। अरे यहां कोई समझने नही आया, देखने आया सो देखो मुझे !
राजा : मुझे बताना होगा ?
नीलकंठ : सब भोगना होगा।
राजा : भोगना होगा ?
नीलकंठ : देखना होगा।
राजा : देखना होगा ?
नीलकंठ : जो जितने गहरे छिपा है, जो जितने नीचे दबा है, उसे बाहर लाना होगा। कहीं कुछ रहस्य नही है। जो रहस्य है, वही प्रेत है। जो रहस्य है, वही अन्धकार है। मौत है।

राजा : मुझे कहना होगा ?
नीलकंठ : तुम कौन हो ?
राजा : मैं राजा हूं।
नीलकंठ : तुम्हारा यही अहंकार तुम्हें कुछ नही कहने देता। कुछ प्रकट नहीं होने देता।

(सारे दृश्य में जैसे भूचाल आ गया हो। सब घूमने लगते हैं।)

राजा : सुनो !

(सारा दृश्य अचानक स्थिर हो जाता है।)

राजा : मन्त्री विजयसेन ने तुम्हारी हत्या कर दी थी।
रानी : फिर जी कैसे गई ?
राजा : जीने का रहस्य मैं नही जानता।
नीलकंठ : जीवन को रहस्यमय क्यों बनाते हो ?
रानी : फिर मैं जीवित कैसे हुई ?
राजा : मरा हुआ देखा। अभी जीवित देख रहा हूं।
नीलकंठ : सच क्यों नही बोलते ? आंखों से देखते क्यों नहीं ? दूसरों के कहने से ही क्यों चलते हो ?
रानी : मुझसे कुछ छिपा रहे हो।
नीलकंठ : हम सब एक-दूसरे से छिपाते हैं।
राजा : हम सब एक-दूसरे से छिपाते हैं।
रानी : मैं जानना चाहती हूं—क्यों ?
राजा : रानी !
रानी : तुम सदा मुझसे कुछ छिपाते हो।
राजा : नही !
रानी : मुझसे कपट रखते हो।

नीलकंठ : छिपाने में ही शक पैदा होता है।

रानी : मन्त्री विजयसेन ने सच कहा था।

राजा : मत लो उस विश्वासघाती का नाम।

रानी : मन्त्री कहां है ?

पंचम : जेलखाने में बन्द है।

रानी : उससे मिलना चाहती हूं।

पंचम : हत्यारा है।

रानी : इसका सबूत ? लोग मुझे देखने क्यों नहीं देते ? मुझे रहस्य-भरी कथाओं में क्यों बाधकर रखना चाहते हैं ? मैं इसे तोड़कर रहूंगी। मन्त्री सच कह रहा था।

राजा : क्या ?

रानी : तुम्हें उससे भय है। वह तुम्हारा रहस्य जानता है। उस पर झूठा आरोप लगाकर उसे खत्म कर देना चाहते हो। मुझे इस राजमहल की चहारदीवारी में कैद कर ताजिन्दगी सजा देना चाहते हो। तुम्हें मुझपर नहीं, अपनी प्रतात्मा पर विश्वास है।

नीलकंठ : जो भीतर दबा भय है वही है प्रेतात्मा!

रानी : मन्त्री से मिलना चाहती हूं।

राजा : फिर वही जिद।

रानी : हां वही। पर फिर वही नहीं!

राजा : सोच लो!

रानी : देखूंगी!

राजा : देखो!

(ताली बजाता है।)

पंचम : जी महाराज!

राजा : रानी को मन्त्री से मिलाओ।

पंचम . जेल का दरवाजा खोल दू ?

राजा : खोल दो।

(राजा चला जाता है। पंचम दरवाजा खोलता है ? मन्त्री निकलता है।)

रानी . तुम सब लोग यहां से चले जाओ !

(पंचम चला जाता है। सारे पंछी दृश्यवत् हो जाते हैं।)

मन्त्री : महारानी !

रानी : इतना आश्चर्य क्यों ? तुमने सच कहा था। हमारे पास समय नही है।

मन्त्री : आज्ञा दीजिए।

रानी . मैं ऐसी जगह नही रहना चाहती, जहा परस्पर विश्वास न हो। मैं उस पुरुष के साथ नही रह सकती जो रहस्य, छल, कपट की अंधेरी गुफा में बन्दी है। आत्मविस्मृत है। जिसके संग रहकर कुछ करने को न हो, वहा मैं एक क्षण नही रह सकती।

(दृश्य में एक किनारे चुपचाप राजा प्रकट होता है। वह सब सुन रहा है। सब देख रहा है।)

रानी : वचन दो, मेरे साथ छल नही करोगे।

मन्त्री : छल नही करूंगा।

रानी : रहस्य का कोई पर्दा नही रखोगे।

मन्त्री : वचन देता हूं।

(विराम)

रानी : क्या यह सच है, मैं तुम्हारे हाथों मारी गई थी ?

मन्त्री : हां, यह सच है।

रानी : फिर मैं जीवित कैसे हूं ?

मन्त्री : राजा ने अपनी आधी आयु देकर तुम्हें फिर से जीवित किया।

रानी : नही !

मन्त्री : तुम्हें अपना आधा जीवन दिया।

रानी : नफरत की आग में जिन्दा जलाने के लिए।

(राजा सामने आकर)

राजा : (अलग से) क्या परिस्थिति सब कुछ बदल देती है ? प्रेम, त्याग, तपस्या अपने-आप में कुछ नही होता ? सम्बन्ध केवल बाहर से टिका होता है ? जिसका चित्त स्वाधीन नही उसको बाहर से छुटकारा नहीं मिल सकता। जो चुप-चाप सब कुछ मान लेता है उसमें इतनी ताकत नहीं कि बाहर को अस्वीकार करे। पर सारा सम्बन्ध क्या उसी बाहर पर निर्भर है ? इसे देखूंगा। देखकर ही विश्वास करूंगा।

मसखरा : ईश्वर तुझे आख दे।

दूसरा दृश्य

(एक ओर विरह में डूबी गंगा गा रही है।)

गवना कराय छैला घर बैइठउले से
अपुना चलें हों परदेस हो विदेसिया।

रोइ रोइ काटू मैं दिनवां से रतिया हो
कब अइहैं हमरो परान रे विदेसिया।

(दूसरी ओर दृश्य में राजा और पंचम)

राजा : पंचम।
पंचम : हां, महाराज!
राजा . तेरी गंगा तुझे कभी कोई चिट्ठी-पत्री नहीं देती?
पंचम · अरे, औरत की जात। आंख से ओझल हुई नहीं कि भूल गई। अरे, वही बाघा गोटी खेलती होगी।

(गंगा विरह में दूसरी ओर डूबी हुई गा रही है। दायीं ओर गंगा गाती हुई दिखती है—)

कहे न कोई परदेसी की बात
जब से गये पिया सुधि नहिं लीने
होई गये पीले गात।
आधे माह आवन हरि कहि गये
सो दिन बीतो जात
कहे न कोई परदेसी की बात।

(इस गायन के बीच दृश्य के एक-एक पंछी गंगा के पास जाते हैं। उसके हाथ से पत्र लेकर चलते हैं। चलते-चलते, उड़ते-उड़ते राजमहल में आते हैं। पंचम के पास आने लगते हैं। राजा बढ़कर उनसे पत्र ले लेता है और चुपचाप पढ़कर फाड़ देता है। फटा पत्र पंचम के हाथ में देता है। पंचम उसे कूड़ेदान में फेंक देता है।)

मसखरा : वाह राजा, दूसरे की चिट्ठी फाड़कर क्या बजाते हो बाजा!
राजा : गंगा तुझे भूल गई होगी।

पंचम : चिट्ठी जरूर लिखती होगी, पर पता गलत लिख देती होगी। बड़ी गैर-जिम्मेदार है।

राजा : किसी और के संग चली गई होगी।

पंचम : भाड मे जाय। मुझे औरतों की कोई कमी नही।

राजा : तुमने कोई चिट्ठी-पत्री भेजी ?

पंचम : जब वह नही भेजती तो मैं क्यों भेजू ?

राजा : किसी मुसाफिर से संदेशा ही भिजवा दिया होता।

पंचम : जो भी उधर जाता है, संदेसा भिजवाता हूं, पर लगता है किसीमे उसकी भेंट नही होती।

मसखरा : हाय बेचारा ! कैसी बेवकूफी का है नज्जारा।

तीसरा दृश्य

(गंगा पंचम के विरह में गा रही है—)

कहै न कोई परदेसी की बात
जब से गए पिया सुधि नहिं लीने
पड़ि गए पीले गात।
आध माह आवन हरि कहि गए
सो दिन बीते जात
कहै न कोई परदेसी की बात'''।

(पंछी मुसाफिर के रूप में एक-एक कर उधर से गुजरते हैं।)

गंगा : सुनो, सुनो। ऐ भइया मुसाफिर !

प० मुसाफिर . क्या है ?

गंगा . राजा नगर मे महाराजा का महल देखा है ?

प० मुसाफिर देखा है।

गंगा राजमहल की तरफ से आए हो ?

प० मुसाफिर . आए हैं।

गंगा : किसी पंचम का नाम सुना है ?

प० मुसाफिर : सुना है। पंचम राजमहल मे चौकीदार है।

गंगा · (प्रसन्न) पंचम को देखा है ?

प० मुसाफिर : देखा है।

गंगा : पंचम कैसे है ?

प० मुसाफिर · खूब मौज उडाता है। दूध-भात खाता है।

गंगा · अच्छा !

प० मुसाफिर . खूब मौज उडाता है ? दूध भात खाता है।

(कहता हुआ चला जाता है। दूसरा मुसाफिर दिखाई पड़ता है।)

गंगा : सुनो भइया सुनो। मेरी एक विनती सुनो।

दू० मुसाफिर : क्या, गिनती गिनो। बहिन जी, मेरा हिसाव-किताब तो बहुत कमजोर है। माफ करो, मैं गिनती नही गिन सकता।

गंगा : (अलग से) यह बहरा है क्या ?

दू० मुसाफिर : मैं अपना नाम-पता नही बताऊंगा।

गंगा : (ऊंचे स्वर में) राजमहल मे आए हो ?

दू० मुसाफिर : ताजमहल देखा है।

गंगा : पंचम चौकीदार का नाम सुना है ?

दू० मुसाफिर : हां, रास्ते मे एक हाथी मिला था। उसके हौदे मे

हौल्दार बैठा था । थानेदार घोड़े पर था ।

गंगा : अच्छा, अच्छा, अपने रास्ते जाओ ।

दू० मुसाफिर : जब तुम इतना कह रही हो, मैं बैठ जाता हूं ।

(बैठ जाता है । गंगा दूसरी तरफ बढ़ जाती है । दूसरा मुसाफिर उठकर चला जाता है । तेज़ चलता हुआ मसखरा, तीसरा मुसाफिर बना आता है ।)

गंगा : ऐ भइया, सुनो तो !

ती० मुसाफिर : देखो मैं बहुत जल्दी मे हूं । किसी ऐरे-गैरे का भइया-बेटा नही हूं । बोलो, बोलो, जल्दी बोलो, क्या बात है ? मेरी दाढ़ी मत निहारो, जल्दी के मारे बढ़ गई है । हां तो ।

गंगा : राजमहल देखा है ?

ती० मुसाफिर : देखा नही तो इतनी जल्दी मे क्यों हूं ।

गंगा : क्या देखा ?

ती० मुसाफिर : क्या नही देखा । घोड़े पर चढा बाघ देखा । नंगी धोबिन देखी । एक टके मे सवा किलो भाजी सवा किलो सोना बिकते देखा ।

गंगा : देखा अपनी आंखों मे ?

ती० मुसाफिर : देखा नही, सुना ।

गंगा : पंचम चौकीदार का नाम सुना है ?

ती० मुसाफिर : सुना क्या, देखा भी । मिला भी ।

(मुसाफिर बहुत जल्दी में है । भागता रहता है ।)

गंगा : अरे सुनो तो !

ती० मुसाफिर : पूछो ! बहुत जल्दी मे हूं ।

गंगा : पचम ने मेरे लिए कोई संदेसा भेजा है ?

ती० मुसाफिर : सदेसा ? अरे उसने बहा शादी कर ली । एक नही, तीन तीन ! तबला बाजे धीग धीग ।

(गंगा रोती है ।)

ती० मुसाफिर : एक औरत ने तो उसे मार-मारकर टाग तोड दी । वह लंगड हो गया है । ऐसे चलता है ऐसे । (गंगा उसकी चाल देखकर हंसती है) लौंडे उसको चलते देखकर चिढाते है—लगड मचंगड़ के तीन मेहरी, एक कूटै एक पीसै एक भाग रगरी । मुझे जल्दी है, मैं जा रहा हूं ।

गंगा : अरे, सुनो तो ।

ती० मुसाफिर : यही से पूछ लो, क्या है ?

गंगा : उसने कुछ कहा है ?

ती० मुसाफिर : राजमहल में मंत्र मारकर उसे रात को कूकुर बना दिया जाता है । दिन के वक्त भेड़ा । मेंअ…मेंअ… भौंअ…भौ…मेंअ

(मुसाफिर चला जाता है । गगा खड़ी रोती रह जाती है । पंछी गाते हैं—)

कहे न कोई परदेसी की बात ।
जब से गये पिया सुधि नही लीने
होइ गये पीले गात—
कहे न कोई परदेसी की बात ।
आधे माह आवन हरि कहि गये
गो दिन बीते जात

चौथा अंक

पहला दृश्य

(राजा के सामने पंचम डंडे में गठरी लटकाए खड़ा है।)

राजा : अपने देश जाओगे ?

पंचम : हां, अब तय कर लिया।

राजा : नही मानोगे ?

पंचम : हा, चाहे जो हो जाय। गंगा के बिना अब एक छिन भी नही रहा जाता।

राजा : गंगा भूल गई।

पंचम : भूल जाय। मैं तो नही भूला।

राजा : गंगा ने कभी एक चिट्ठी-पत्री भी नही भेजी।

पंचम : असली तार तो भीतर से जुडा है।

राजा : अगर मैं तुझे छुट्टी न दू तो ?

पंचम : भाग जाऊंगा।

राजा : कैद मे डाल दूं तो ?

पंचम : पंछी बनकर उड जाऊंगा।

राजा : पछी के पिंजडे मे डाल दूं तो ?

पंचम : पिंजरा सहित उड जाऊंगा।

राजा : अच्छा !

पंचम   बहुत अच्छा ।

(राजा ताली बजाता है । सिपाही आता है ।)

सिपाही   जी सरकार !

राजा   : इसे जेलखाने में डाल दो ।

सिपाही   यह तो पंचम चौकीदार है ।

राजा   बड़ा मक्कार है ।

सिपाही   होगा, जरूर होगा ।

राजा   . गद्दार है ।

सिपाही   · यह तो बड़ा होशियार है ।

राजा   चुप रह !

(सिपाही पंचम को ले जाता है । पंचम उसके हाथ जोड़ता है । कुछ रुपये देना चाहता है । सिपाही उसे ले जाता है । पंछी जेल का घेरा बन जाते हैं । पंचम बीच में बंद हो जाता है । सिपाही लाठी पीटता हुआ पहरा देने लगता है । राजा चला जाता है । पंछी गाते हैं--)

जमी बरखै आसमान भीजै
जे उल्टा राज चलाइए जी ।

सिपाही   · तो हम का कर ?

सब   : बिन बातिन दीया जलाइए जी ।
बेरंगी रंग दिखाइए जी ।
जे उल्टा राज चलाइए जी
तो बिन बातिन दीया जलाइए जी ।
बेरंगी रंग दिखाइए जी ।

दूसरा दृश्य

(गंगा बैठी है। राजा आता है।)

राजा : अरे गंगा! तू यहां बैठी क्या कर रही है ?

गंगा : मेरा पंचम कहां है ?

राजा : उसने कभी कोई चिट्ठी-पत्री नही भेजी ?

गंगा : वह कहा है ?

राजा : कोई संदेसा भी नही ?

गंगा : मेरा पंचम कहां है ?

राजा : अब तू अकेली यहां क्या करेगी ? चल तुझे राजमहल ले चलता हूं।

गंगा : नही, वहा से कोई लौटता नही।

राजा : तुझे सोने की पालकी पै बिठाकर ले चलूंगा। और जब तू कहेगी मैं यहा तुझे खुद लौटाने आ जाऊंगा।

गंगा : सच ?

राजा : हां, सच !

मसखरा : अब देखो तमाशा। पानी में लगावै आग यही है इसका भाग।

गंगा : (अचानक) पर मेरा पंचम कहा है ?

राजा : अरे भूल जा पंचम को जब वह तुझे भूल गया।

गंगा : मुझे भूल गया ?

राजा . कभी खोज-खबर नही ली।

गंगा : मैंने उसके पास इतनी चिट्ठिया भेजीं।

राजा · पता नही। उसे एक भी नही मिली।

गंगा : ऐसे कैसे हो सकता है ।

राजा . हुआ है ।

गंगा मैंने अभी देखा, वह अंधेरे में खड़ा है । राजा, तुम अंधेरे में खड़े हो । वह बंधा हुआ है । वह बंद है । जिसने उसे बनाया बंदी, वही बंदी-गृह में है । सूरज-किरन जब किसी एक जगह पड़े तो वहां आग लग जाती है । चारों तरफ फैलने में वही धूप हो जाती है ।

मसखरा . अरे रे रे, यह तो जागकर भी सपने देखती है ।

राजा : गंगा ! क्या बक रही है ?

गंगा . जो राजा था, जो अपराध के हिसाब से दंड देता था, जो अपने से दूसरे को बांटकर नहीं देखता था, जो त्याग के लिए राजगद्दी पर बैठता था, मैं उसीकी प्रजा हूं । मैं उसी राजा की प्रजा हूं ।

(गंगा दौड़ती है । राजा बढ़कर अंधेरे में खड़ा सोचता रह जाता है ।)

राजा : यह क्या कह रही है ? मैं इसे बेवकूफ समझता था''''।

मसखरा सबको बेवकूफ समझे तभी तो खुद बेवकूफ बन गए !

तीसरा दृश्य

(बंदी-गृह में पंचम खड़ा है । रानी आती है ।)

रानी · जो कभी अपने-आप में नहीं बंधा, उसे कौन बना सकता है बंदी ? क्या है बंदी जीवन, इसे बनाने वाला कौन है,

जो इतना भी नहीं जानता, उसे कारागार में कौन डाल सकता है ? पंचम !

पंचम : महारानी !

रानी : जिसने दूसरे को बाधकर रखना चाहा है, यह बदी-गृह उसीका निर्माण है। वह स्वय इसमे कैद है। इसमे रानी कैद है। राजा प्रभुत्व का डडा लिए बाहर पहरा दे रहा है। इस कारागार मे तुझे बदी बनाकर नही रखा जा सकता !

सिपाही : महारानी, आप राजभवन मे खुद बदी है। बदी बदी को नही मुक्त कर सकता।

रानी : कारागार को बंदी जानता है। यह बदी नहीं है।

पंचम : महारानी !

रानी : यह मुक्त है। इसे कोई बंदी नही बना सकता।

(रानी दरवाजा खोलना चाहती है।)

पंचम : राजा कोप करेंगे।

रानी : करेंगे !

पंचम : राजा अपना दिया हुआ हुक्म वापस ले लेंगे।

रानी : मैं किसीके दान से जीवित नही रहना चाहती।

(रानी दरवाजा खोल देती है। पंचम बाहर आकर रानी का चरण स्पर्श करता है।)

चौथा दृश्य

(गंगा गांव की दो स्त्रियों से घिरी बैठी है। सब गा रही हैं—)

पुरुब से आई रेलिया पछिम से जहजवा
पिया के लादि लेइगै ना।
रेलिया होइगै मोर सवतिया पिया के लादी लैगे हो
रेलिया न बैरी जहजिया न बैरी
उहै पइसवा बैरी हो
देसवा देसवा भरमावै उहै पइसवा बैरी हो।

प० स्त्री : राजा के साथ चली जा।

दू० स्त्री : रानी बन जाएगी।

प० स्त्री : राजा सोने की पालकी पर बिठाकर ले जाएगा।

दू० स्त्री : पचम अब नही लौटेगा।

प० स्त्री : पुरुष बड़े बेईमान होते है।

गंगा : स्त्री कोई कम है। मैंने ही जिद करके पंचम को परदेस भेजा। मैं न राजा के दरबार में गई होती, न पंचम से बिछुड़ती। मैंने ही पीली साड़ी मांगी। अंगूठी गढ़ाने को मैंने ही कहा।

प० स्त्री : तेरे तो करम फूटे है।

दू० स्त्री : तेरी तो मति मारी गई।

प० स्त्री : अरे रानी बनेगी।

गंगा : जो रानी होती है उसके एक राजा होता है। और जो

राजा होता है उसकी एक रानी होती है ।

मसखरा : बहुत सही बात कही है । और सही बात यह कि राजा को *न रानी पर विश्वास, न रानी को राजा पर ।*

(पृष्ठभूमि से पंचम की पुकार आती है ।)

पंचम : (पुकार) गंगा ! ओ री गगा !

(गंगा उन दोनों औरतों से अपना हाथ छुड़ाकर आगे बढ़ती है ।)

गंगा : पचम ! मेरा पंचम !

प० स्त्री : (पकड़ती है) यह तो सपने देखती है ।

दू० स्त्री : (खींचती है) इसका दिमाग फिर गया है ।

(पंचम की पुकार नजदीक आती है ।)

प० स्त्री . अरे चल, ओझा के पास ले चलू ।

दू० स्त्री : चल, राजा के पास ले चलू ।

(पंचम आता है । पंछी गाते हैं—)

संया मोर गइलं रामा पुरबी बनीजिया
सो लैहो अइलं ना
रस बेंदुली टिकुलिया सो लैहो अइलं ना ।
टिकुली पहिनि धनि बैठी ओसरवा
सो चमचम चमकै ना
मोरे संया कै टिकुलिया हा चमके लागै ना ।

(इस बीच पंचम ने गठरी खोलकर गंगा को टिकुली और मुंह देखने का शीशा दिया है । गंगा माथे पर टिकुली लगाकर अपने को देखने लगी है ।)

गंगा : अब बोलो, अब तक कहा थे ?

पंचम : सीधे परदेस से चला आ रहा हूं ।

गंगा : जब मे गए, मेरी खोज-खबर ली ?

पंचम चिट्ठी भेजी। जो भी मुसाफिर इधर आ रहा था उसके हाथ सदेसा भिजवाया। तूने भी तो कोई चिट्ठी नही दी।

गंगा : हर मगलवार को चिट्ठी अपने हाथ से लिखकर अपने हाथ से डाकिये को देती रही हूं।

(मसखरा आता है।)

मसखरा . गोहार लागो गोहार, मेरी बीवी ने मेरी दाढी नोच ली। बोलो अब मुझे कौन पहचानेगा ? अरे कुछ पानी-पाथर दिया कि पट्ठे से लडने ही लगी।

गंगा · मैं इससे नही बोलती।

मसखरा : अरे इसकी तीनो मेहरिया किधर है ?

गंगा : बता, कहा है तेरी मेहरियां ?

(पंचम का डंडा लेकर गुस्से से पूछती है। उधर मसखरा तान लगाता है—)

मसखरा : लगड मचंगड के तीन मेहरी।
एक कूटै एक पीसै एक भांग रगरी ॥

पंचम · यह क्या तमाशा है ? कौन लंगड़ मचंगड ? किसकी तीन मेहरी ?

गंगा : तू है लगड मचंगड। तेरी तीन मेहरी।

(मसखरा पंचम को चलाकर देखता है। मसखरा खुद लंगड़ा रहा है।)

मसखरा : अरे भइया, तुम बडे ठीक समय पर आइ गए। ई तो सोने की पालकी पै बैठकर राजा के यहा जा रही थी !

पंचम · क्यो ?

गंगा : हा, जा रही थी क्यों न जाऊ ?

पंचम : तेरी यह मजाल ।
गंगा : मुझे आंख दिखाता है ।
पंचम : औरत की जात टके-भर की औकात ।

(मसखरा दोनों को लड़ा रहा है ।)

मसखरा : और नही तो क्या ।
गंगा : मैंने तेरी कमाई नही खाई ।
पंचम : जबान बंद करती है या नही ।
मसखरा : यही तो बात है । हां जी, यह भी कोई बात है ।
गंगा : मैं तेरी बीवी नही जो तेरी बात सुनू ।
मसखरा : बिल्कुल सही बात । आल राइट । खूब कहा । और बोलो !
गंगा : बडा आया कमाई करके !

(पंचम बढ़कर गगा के हाथ से डंडा छीनकर उसे मारने लगता है । गोहार लगाता हुआ मसखरा भागता है । गंगा चिल्लाती है—)

गंगा : बचाओ, बचाओ ! दुहाई राजा की । गोहार लागो राजा।

(राजा आता है । पीछे-पीछे मसखरा है ।)

मसखरा : इसने उसको मारा । उसने इसको मारा । मारा उसको इसने । उसको इसने मारा ।

(गंगा रो रही है । राजा पंचम को मारना शुरू करता है । मसखरा भगाता है । सहसा गंगा रोना बंद कर पंचम की लाठी से राजा को पीटना शुरू करती है । नीलकंठ दौड़कर राजा को बचा लेता है ।)

गंगा : इसे पुकारा था न्याय करने के लिए । मारा क्यो ? तुझे मारने का अधिकार किसने दिया ? तू राजा है । पर मारने वाला कौन है ? उसने मारा । मारने का उसका अधिकार

है। वह प्रेम भी तो करता है। मारना ही हमारा प्रेम है। मैं इसके बिना नही रह सकती। यह मेरे बगैर नही रह सकता। हम लड़ते हैं। हम दो है। हम हैं।

(दूसरी ओर रानी दिखती है।)

रानी · पुरुष समझता है कि बस, वही मनुष्य है। उसीकी इच्छा, उसीका प्रभुत्व मनुष्य का लक्ष्य है। नारी को वह इच्छानुसार स्वीकार कर सकता है या त्याग कर सकता है। पर यह नहीं जानता कि प्रकृति का त्याग पुरुष के लिए आत्म-हत्या के बराबर है।

(राजा आता है।)

रानी : तुम्हारे दान मे अहंकार है। तुम्हारे दिए हुए जीवन से मैं घुट रही हूं। अपने ही जीवन से जीना है। अपनी ही मृत्यु से मुक्त होना है। लो अपना दान वापस लो।

राजा : परिस्थिति सब कुछ नही बदल सकती। मैंने देखा, प्रेम त्याग, तपस्या है। अन्धकार है। विश्वासघात भी है। दोनों है। सम्बन्ध केवल बाहर से नही टिका है। रानी, मुझे क्षमा करो। तुम अपने ही जीवन से जी रही हो। तुम हो तभी मैं हूं। विश्वास करो, मेरे अहंकार और भ्रम की सीमा नही थी। विश्वास को नष्ट कर मैं विश्वास की परीक्षा लेने चला था।

रानी : मेरे महाराजा ! आप मेरे लिए कान का मोती ढूढने गए थे।

राजा : गहरे सागर से ढूढकर ले आया हू।

(रानी के कानों में पहनाने लगता है। उधर पंचम अपनी गठरी में से पीली साड़ी निकालकर गंगा के माथे पर फैलाता है। पंछी गाते हैं—)

ये दो सगुन पंछी
जीवन नदिया की धारा हैं।
(राजा-रानी आते हैं। रानी पीली साड़ी को गंगा के आंचल से बांधती है। राजा उसका दूसरा पल्ला पंचम की कमर से बांधता है।)

नीलकंठ : काटो तो बाढे नहीं बिनु काटे कुम्हिलाय।
ऐसी अद्भुत नारि का रहम कहा नहिं जाय।

सब : हम दो सगुन पंछी
जीवन नदिया की धारा हैं।

रानी : नदी किनारे धुआं उठे रे मैं जानू कछु होय।
जाके कारन जनम गंवाया कहु ना जलता होय।।

सब : हम सब सगुन पंछी
जीवन नदिया रस धारा हैं।
हम दो सगुन पंछी
जीवन नदिया की धारा है।

नीलकंठ : प्रकृति पुरुष का धर्म
नारि को नर प्यारा है।
(सब एकसाथ गाते हैं—)
हम दो सगुन पंछी···

मसखरा : सबका आसीस है सबको प्रणाम है
खेल अब खतम है सबको राम राम है।
(सब गाते हैं। पर्दा गिरता है।)

• • •

मुद्रक : रायसीना प्रिंटरी, ४, चमेलियान रोड, दिल्ली-६